SARDAR PATEL UNIVERSITY, BALAGHAT (M.P.)

DIPLOMA IN ELEMENTARY EDUCATION (D.El.Ed.)
(2-Years Program)

SYLLABUS

Academic Session -2019-20 & Onwards

प्रारंभिक शिक्षा मे पत्रोपाधि
प्रथम वर्ष
सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रस्तावित कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1	बाल्यावस्था एवं बाल विकास (CHILDHOOD AND DEVELOPMENT OF CHILDREN)	120	70	30	100
2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा Education in contemporary Indian Society	120	70	30	100
3	पूर्व बाल्यावस्था– परिचर्या एवं शिक्षा Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)	120	70	30	100
4	भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास Understanding Language and Early Language Development	60	35	15	50
5	पाठ्यचर्या में शिक्षा संप्रेषा तकनीकी का एकीकरण Padagogy and IT integration across the Curriculum	120	70	30	100
6	Proficiency in English	60	35	15	50
7	योग शिक्षा Yoga Education (First Year)	60	35	15	50
8	वैकल्पिक विषय षिक्षण मातृभाषा /क्षेत्री भाषाय शिक्षा Pedagogy of Mother Tongue / Regional Language क. हिन्दी भाषा शिक्षण Hindi Language Teaching ख. संस्कृत Sanskrit Teaching ग. मराठी Marathi Teaching घ. उर्दू Urdu Teaching	120	70	30	100
9	Pedagogy of English	120	70	30	100
10	गणित शिक्षा (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिये) Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)	120	70	30	100
Total			**595**	**255**	**850**

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1	स्व बोध Towards Self-Understanding	1	16	50	50	100
2	रचनात्मक नाटक, ललित कला और षिक्षा Creative Drama, Fine Art and Education	2	10	25	25	50
3	बच्चों का शारीरिक– भावनात्मक स्वास्थ्य और षिक्षा Children's Physical - Emotional Health and Health Education	3	10	25	25	50
4	इंटर्नषिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) (Teaching Practice and School Internship)	-	24	50	50	100
योग				**150**	**150**	**300**
(सैद्धान्तिक व्यावहारिक) महायोग				**695**	**455**	**1150**

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El. Ed.) द्वितीय वर्ष
सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रस्तवित काल खंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
11	संज्ञान अधिगम और बाल विकास **(**Cognition learning and the Devlopment of children**)**	80	70	30	100
12	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध Understanding of Society, Education and Curriculum	80	70	30	100
13	शिक्षा में समावेषी एवं जेंडर मुद्दे Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education	88	70	30	100
14	शालेय संस्कृति, नेतृत्व और षिक्षक विकास (School culture, leadership and teacher development)	80	70	30	100
15	Proficiency in English	50	25	25	50
16	योग शिक्षा Yoga Education	50	25	25	50
17	पर्यावरणीय अध्ययन षिक्षण Pedagogy of Environmental Studies (for early Primary and Primary)	80	70	30	100
18	वैकल्पिक विषय षिक्षण Optional Pedagogy Courses क. सामाजिक विज्ञान षिक्षण Pedagogy of Social Science ख. अंग्रेजी भाषा षिक्षण Pedagogy of English Language ग. गणित षिक्षा Pedagogy of Mathematics घ. विज्ञान षिक्षा Pedagogy of Science	80	70	30	100
Total		**580**	**470**	**230**	**700**

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रस्तावित कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1-	कार्य और शिक्षा Work & Education	24	25	25	50
2	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा Creative Drama, Fine Art and Education	10	25	25	50
3-	बच्चों का शारीरिक– भावनात्मक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा Children's Physical - Emotional Health and Health Education	10	25	25	50
4-	इंटर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) Internship Teaching Practice and School Internship	96 दिन	200	200	400
Total		**275**	**275**	**550**	**1250**

प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का कुल योग

	सैद्धान्तिक	व्यावहारिक	योग
प्रथम वर्ष	850	300	1150
द्वितीय वर्ष	700	550	1250
कुल योग	1550	850	2400

डी. एल. एड. प्रथम वर्ष

बाल्यावस्था एवं बाल विकास

(Childhood and Development of Children)

(प्रथम प्रश्न पत्र)

विषयवस्तु

इकाई 1. विकास संबंधी दृष्टिकोण (Perspective in Development)

- बाल विकास का परिचय : वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के संबंध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय, मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त।
- बाल विकास के अध्ययन की स्थायी विषय वस्तु : बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवनकाल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।
- बाल विकास के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रविधियां : प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट
- झलकियां एवं वर्णात्मक कथाएं, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त।
- बच्चों की स मावेशी शिक्षा : अवधारणा और प्रविधियां।

इकाई 2. शारीरिक – गत्यात्मक विकास (Physical-Motor Development)

- शारीरिक – गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता।
- शारीरिक– गत्यात्मक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका, जैसे खेल आदि।

इकाई– 3. भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास (Langauage, Social and Emotional Development)

- बोलना एवं भाषा विकास
- पूर्व–भाषायी संप्रेषा
- भाषा विकास की अवस्थाएं
- भाषा विकास के स्रोत : घर, शाला एवं मीडिया
- भाषा के उपयोग : संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना
- संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएं : उच्चारण
- संप्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना

सामाजिक विकास

- सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका
- सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका
- संवेगों की आधारभूत समझः गुस्सा, डर, चिंता, खुशी आदि।
- संवेगों का विकास, संवेगों के कार्य, बाल्वी का लगाव सिद्धांत

इकाई 4. समाजीकरण का संदर्भ (Context of Socializaltion)

- समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएं।
- समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएं।
- परवरिश, परिवार एवं वयस्क एवं बच्चों के बीच संबंध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय।
- स्कूलिंग : शिक्षक बालक का साथ संबंध एवं शिक्षक की भूमिका
- सहपाठियों के साथ संबंध : साथी मित्रों के साथ संबंध, स्पर्धा एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत।
- सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक (जेंडर) विकास : लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़ वादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव।
- शाला त्यागी की समस्या।

इकाई 5. बचपन (Childhood)

- बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के संदर्भ में बचपन
- बचपन की धारणा में समानताएं एवं विविधताएं और खासतौर से भारतीय संदर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं।

4.0 अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
असाइनमेंट में उठाये गये मुद्दों और सरोकारों का व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में प्रस्तुतीकरण।
सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों का विश्लेषण एवं वर्णन

5.0 सत्रगत कार्य (Assignment)

बच्चे के संसार में झांकना : क्या और कैसे–1

(लोगों के बीच जाना, रिकार्ड तैयार करना व कक्षा में चर्चा) नोट : निम्नांकित में से कोई तीन प्रायोगिक कार्य लिये जा सकते हैं–

प्रायोजना कार्य–1

विद्यार्थी, अखबार में प्रकाशित कोई दस आलेखों को संकलित करेंगे, जिसमें बच्चों के लालन पालन और बचपन से संबंधित मुद्दे होंगे। विद्यार्थी इनका विश्लेषण करेंगे और कक्षा में चर्चा करेंगे।

प्रायोजना कार्य –2

बच्चों और बचपन के विविध संदर्भों का अध्ययन करने की विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के मौके।
विद्यार्थी, विविध पृष्ठभूमि वाले 5 से 14 साल तक की उम्र के बच्चों को समझने के लिए किसी भी बच्चे को ले सकते हैं और उसका अध्ययन करने के लिए केस प्रोफाइल विधि का इस्तेमाल कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षक, अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा लाई गई विभिन्न प्रोफाइल से चुनकर कक्षा को इस तरह संयोजित कर सकता है कि विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों की जानकारी प्रस्तुत हो सके। इससे व्यापक दायरे में जानकारी मिलेगी जिसे बाद में समूहों में चर्चा कर विश्लेषित किया जा सकता है। यह कार्य हाशियाकृत बचों, पहली पीढ़ी के अधिगमकर्ता, सड़कों पर जीने एवं झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों को समझने और उनकी विकासात्मक व शैक्षिक जरूरतों में सहयोग करने में मददगार हो सकेगा।
केस प्रोफाइल विधि में अवलोकन और साक्षात्कार जैसे साधनों का उपयोग, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों, बच्चों के लालन पालन के तरीकों, स्कूल से अपेक्षाओं और बच्चों के सपनों व कल्पनाओं का अध्ययन करने में किया जा सकता है।

प्रायोजना कार्य –3

गिजूभाई बधेका की पुस्तक दिवास्वप्न का अध्ययन करते हुए बचपन और बच्चों को कैसे सिखाए पर आलेख तैयार करें।

प्रायोजना कार्य – 4

विद्यार्थी एक फिल्म देखेंगे, जैसे कि सलाम बॉम्बे या तारे जमीं पर या कोई अन्य संबंधित फिल्म। फिल्म का चुनाव शिक्षक और विद्यार्थी संयुक्त रूप से मिलकर करेंगे। बाद में मिलकर उसमें दिखाये गये बच्चों के चित्रण पर अपनी राय और अनुभूति साझा करेंगे। इसमें विविध पृष्ठभूमि के बच्चों और उनके बचपन पर चर्चा की जा सकेगी।

प्रायोजना कार्य –5

विद्यार्थी, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले 4–5 अभिभावकों से, बच्चों के लालन पालन एवं परवरिश के तरीकों के संदर्भ में साक्षात्कार करेंगे और फिर अपनी रिपोर्ट कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।
शिक्षण के लिए निर्देश : उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियों या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- माथुर, एस.एस. (द्वितीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी.डी. (चालीसवाँ संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाण्डेय, रामशकल (तृतीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- जॉन होल्ट– बच्चे असफल क्यों होते है ? एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
- राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षागत प्रक्रियाओं पर विकसित सामग्री
- राज्य शिक्षा केन्द्र की बेवसाइट www.ssa.mp.gov.in
- एज्युकेशन पोर्टल www.mp.gov.in/education portal.
- बाल विकास – डॉ. ओ.पी. सिंह
- छात्र का विकास एवं शिक्षण – डॉ. आर.ए.शर्मा
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान – प्रो. सुरेश भटनागर
- बचपन और बाल विकास – पी.डी. पाठक, अग्रवाल पब्लि. आगरा
- बचपन और बाल विकास – श्रीमति शर्मा, डॉ. बरौलिया एवं प्रो. दुबे राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- Developmental Psychology & H.E.
- Sasaswati T.S.(Ed.) (1999) Culture Socialigation & Human Development] Theory Reearch & Applications in india, Sage Publications.
- Chapter 9: Physical Development in Middle Childhood.
- Mukunda, K.V. (2009) Chapter is Child Development, 79-96.s
- Post- Colnial Indian Childhood, Sharda Balgopal.
- (http://www.tess-india.edu.in/ esa OER एवं वीडियो)

डी. एल.एड प्रथम वर्ष
विषयः समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा

Education in contemporary Indian Society
(प्रश्न पत्र –2)

इकाई 1 : राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा (State, Politics and Indian Education)

- राज्य एवं शिक्षा
- शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति
- नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव
- सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण
- हाशियाकृत (marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा
- भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना

इकाई 2 : समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य (Perspectives on Society and Schooling)

- भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष संदर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा
- संस्कृति एवं शिक्षा
- आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा

इकाई 3 : भारतीय संविधान एवं शिक्षा (Constitution of India and Education)

- स्वतंत्र भारत की संवैधानिक दृष्टि : तब और अब
- संविधान एवं शिक्षा : शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ , शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान
- विशिष्ट संदर्भों से जुड़े बच्चे (जाति, वर्ग, धर्म, भाषा एवं लिंग) और शिक्षा से संबंधित नीतियां, अधिनियम
- एवं प्रावधान
- (प्रारंभिक शिक्षा की विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ एवं उनका क्रियान्वयन व प्रभाव)
- भारतीय संविधान में समता एवं न्याय, भेदमूलक शाला प्रणाली (differential school) एवं समान पड़ोस शाला (common neighbour school) प्रणाली का विचार
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 एवं म.प्र. नियम 2011

इकाई 4 : शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार (Contemporary Issues and Concerns in Education)

- लोकतंत्र एवं शिक्षा
- उदारीकरण एवं शिक्षा
- वैश्वीकरण एवं शिक्षा
- खेतिहर, दलित एवं नारीवादी आन्दोलन और शिक्षा पर उनके प्रभाव
- समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीयकरण

इकाई 5 : सामाजि क बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक (Teacher as Social Transformer)

- एक चेतनशील बुद्धिजीवी के रूप में शिक्षक
- शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व
- शिक्षक नैतिकता
- शिक्षक एवं सामुदायिक विकास
- सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक

सत्रगत कार्य :– (Assignments)

- समसामयिक भारतीय समाज में शैक्षिक चुनौतियों के संदर्भ में नियत कार्य एवं प्रायोजना कार्य कुल तीन कार्य दिये गए हैं। प्रत्येक खंड में से एक कार्य लिखिए।
- खंड 'अ' नियत कार्य – (Assignments)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक शिक्षा हेतु की गई अनुशंसाओं की सूची बनाइए।
- प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के पूर्व और पश्चात् हुए शालेय तंत्र में बदलाव का तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कीजिए।
- सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की सूची बनाइए । किसी एक योजना के मूलभूत लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया लिखिए।
- बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह हेतु शिक्षा के प्रावधानों एवं शैक्षिक विकास पर इनके प्रभाव लिखिए।
- शिक्षा का अधिकार लागू होने के पश्चात् आपके क्षेत्र में हुए सामयिक बदलाव पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने जिले की विभागीय संरचना को स्पष्ट करते हुए फ्लोचार्ट बनाइए।
- आर्थिक विकास में प्रारंभिक शिक्षा की भूमिका की तर्क युक्त विवेचना कीजिए।

डी. एल.एड. प्रथम वर्ष
पूर्व बाल्यावस्था– परिचर्या एवं शिक्षा
(Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)
(प्रश्न पत्र – 3)

इकाई : 1 प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व।
(Definition, Nature and Significance of Early Childhood and Education)

प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य।
जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्व जानना।
अधिगम को सुगम बनाने के लिए प्रारंभिक बचपन में उम्र तक बढ़ाने संबंधी तर्क।
विद्यालयों में प्रारंभिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

इकाई : 2 विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ (Principles and Methods of Developmentaly Appropriate ECCE Curriculum)

बच्चे कैसे सीखते हैं : प्रारंभिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ।
प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्व।
बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ ।
प्रारंभिक वर्षों में साक्षरता एवं अंक ज्ञान।

इकाई : 3 बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन
(Planning and Mannagement of ECCE Curriculum)

- सुगठित एवं संदर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धांत
- दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना
- परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबंधन

इकाई : 4 बच्चों के प्रगति का आकलन (Assessing Children's Progress)

- प्रारंभिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदन्ड
- बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण
- बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन
- घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना

सत्रगत कार्य (Assignment) कोई– 3

- प्रारंभिक बचपन के वर्षों (3–8 वर्ष) के लिए कोई दो स्थानीय खेलों/गतिविधियों को लिखिए एवं उसके द्वारा होने वाले विकास पर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।
- किसी आंगनवाड़ी केन्द्र का भ्रमण कर बच्चों को उँचाई और वजन का तुलनात्मक अध्ययन कर स्वास्थ्य सम्बन्धी विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- कक्षा 1 में आगंनवाड़ी से अध्ययन करके पहुँचे बच्चे एवं सीधे शाला आने वाले बच्चों की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
- शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ।

डी. एल.एड. प्रथम वर्ष
भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास
Understanding Language and Early Language Development
(प्रश्न पत्र–4)

इकाई 1 भाषा क्या है (What is language)

- परिचय
- भाषा, विचार और समाज
- पशु एवं मानव संप्रेषण के बीच अंतर
- भाषा की विशेषताएँ, भाषा के कार्य
- भाषा की संरचना
- भाषा और उसमें निहित शक्ति

इकाई 2 भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Liestenig & Speaking)

- भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान
- बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इसका प्रभाव
- भाषाई विविधता– भारत एवं मध्यप्रदेश के संबंध में
- बहुभाषिकता– कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में

इकाई 3 भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)

- परिचय
- भाषा और बच्चे
- अधिग्रहण और सीखना
- प्रथम भाषा अधिग्रहण
- द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना

इकाई 4 भाषा की कक्षा (Language Classroom)

- परिचय
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य (aims & objectives)
- भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण
- शिक्षक की भूमिका
- त्रुटियों की भूमिका

इकाई 5 भाषाई कौशल क्या है (Developing language skills) (1)

- परिचय–
- सुनना– सुनने से तात्पर्य
- बोलना– बोलने से तात्पर्य
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास– संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनाना, कविता सुना

इकाई 6 भाषाई कौशलों का विकास (Developing language skills) (2)

- परिचय
- साक्षरता और पढ़ना–पढ़ने से तात्पर्य
- वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना– पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नए अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना।
- पढ़ने की रणनीतियाँ– पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ
- भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना
- लेखन एक कौशल?
- पढ़ने और लिखने के बीच का संबंध
- लेखन कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बधित साहित्यिक उदाहरण दिए जाएँ जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

इकाई 7 साहित्य (Literature)

- पाठ्यपुस्तक के प्रकार– कथात्मक एवं वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ संबंध स्थापित करना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना
- संपूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना।
- गद्य एवं पद्य को पढ़ाने की विधियाँ– व्याकरण–रचनात्मक तरीके

इकाई 8 पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षण शास्त्र की समझ (Understanding text book and pedogogy)

- भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत
- विषयवस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके
- पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाइयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण
- अकादमिक मापदंड और सीखने के तरीके
- भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री

इकाई 9 कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom planning and evaluation)

- कक्षा शिक्षण की तैयारी– भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्ययोजना बनाना
- आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में अंतर (CCE)
- भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने–लिखने का आकलन)
- भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)

सत्रगत कार्य (Assignments)

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक–एक प्रयोजना कार्य कीजिए

खंड अ

- गतिविधि आधारित अधिगम (ए.बी.एल.)/सक्रिय अधिगम प्रविधि (ए.एल.एम.) की एक –एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक –पृथक तैयार कीजिए।
- भाषाई कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए।
- भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकनके अधार पर एक भाषाई खेल गतिविधि तैयार करें।
- भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोजना निर्माण कर संपादन कीजिए।
- भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

खंड ब

- विद्यालयीन पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य की विधाओं एवं लेखकों के नाम की सूची तैयार कीजिए ।
- आपके विद्यालय में पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग की कार्य योजना तैयार कीजिए।
- किसी स्थानीय लोककथा को स्थानीय बोली और हिन्दी भाषा में लिखकर प्रस्तुत कीजिए।
- अपने आसपास के किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के स्थल, मेले, त्योहार अथवा स्थानीय स्वतंत्रता–सेनानी के जीवनवृत्त में से किसी एक पर आलेख लिखिए।
- स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन कीजिए।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

- छात्राध्यापकों को पठन हेतु चयनित सामग्री प्रदान करना एवं उस पर चर्चा करना।
- छात्राध्यापकों को छोटे समूह में पठन हेतु अवसर देना एवं उसका प्रस्तुतिकरण करवाना, छूटी हुई बातों को समूह चर्चा द्वारा जोड़ना।
- प्रश्नोत्तर माध्यम से चर्चा एवं सहभागिता द्वारा छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना एवं विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
- छात्राध्यापकों को विषयवस्तु से संबधित प्रायोजना कार्य देना एवं उसके प्रस्तुतिकरण से विषयवस्तु का विकास करना।

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष
पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण
ICT integration across the Curriculum

(प्रश्न पत्र–5)

इकाई–1 स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार

शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी– परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका

- शिक्षा में कम्प्यूटर
- हार्डवेयर– डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप
- सॉफ्टवेयर–सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोस, लिनेक्स, एड्रोइड), एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावरपॉइंट, एमएस एक्सेल)
- इंटरनेट और इंट्रानेट– खोज करना, चयन करना डाउनलोड करना, अपलोड करना
- दस्तावेज़ निर्माण और प्रस्तुतीकरण– टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावरपॉइंट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लाइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)
- मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)– अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व नेशनल रिपोजीटरी ऑफ अन्य जैसे– स्कूल फ़ार्ज, ओपेन सोर्स एडुकेशन फाउंडेशन, नेशनल सेंटर फॉर ओपेन सोर्स एंड ओईआर फॉर स्कूल्स– एचबीसीएसई, टीआईएफआर, एमकेसीएल एवं आई–कोन्सेंट का संयुक्त प्रयास एडुकेशन तथा फ्लॉसएड, ऑर्ग।

इकाई–2 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- मस्तिष्क आधारित अधिगम (बीबीएल)
- ई–लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग
- एल 3 समूह रचना, कापरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम
- फ्लिप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके– पैकेज (काई / सीएएल पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई–कंटैंट, एमओओसी), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकि, व्हाट्सएप, चैट आदि)
- आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)– अर्थ एवं भूमिका
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्ले आदि द्वारा)

इकाई–3 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन

- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आंकलन/मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके– ई–पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि)
- आकलन रूब्रिक के निर्माण के लिए ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर जैसे– आरयूबीआईएसटीएआर, आईआरयूबीआरआईसी।
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन टूल (एसओसीआरएटीआईवीई, पीआईएनजीपीओएनजी, सीएलएएसएस बीएडीजीईएस, सीएलएएसएसएमकेईआर आदि)
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एचओटीपीओटीएटीओ, एसयूआरवीईवाईएमओएनकेईवाई, जीओओजीएलई एफओआरआरएम आदि)

इकाई–4 विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग

- भौतिक विज्ञान आधारित– फीजिओन, ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड
- रसायन विज्ञान आधारित– पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, कलजिअम
- मेथ्स आधारित– जियो ज़ेबा, मेथ्सइसफ़न, सेज मेथ्स, खानएकदेमी, ओआरजी, टूक्स मेथ्स
- समाज विज्ञान आधारित– सेलास्टिया, जी कॉपरिस, वर्ल्ड वाइड टेलेस्कोप, जी कोम्प्रिस,
- भाषा आधारित–ब्राइट स्टोर्म, कॉम,
- अन्य (नॉलेज एडवेंचर, माइंड जीनियेस, डिज़्नी इंटरैक्टिव, द लर्निंग कंपनी, थिंकिंगब्लोक्क्स)
- कार्यशालाओं के माध्यम से।
- करके सीखने के अवसर देना।

अंतरण की विधियाँ Mode of Transaction

- कम्प्यूटर लैब के माध्यम से ।
- इंटरनेट का उपयोग करते हुए।
- डाउनलोड और अपलोड करके सिखाना।
- इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड के माध्यम से ।
- लैपटॉप की सहायता से।
- मोबाइल के एप से।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

best sites for free educational resorces

- http://www.resfseek.com/directory/education_video.html
- http://www.marcandangel.com2010/11/15/12-dozen-places-to-self-educate-yourself-online/
- http://www.jumpstart.com/parents/resources
- http://opensource.com/education/13/4/guide-open-source-education Additional Reference Material & Resource Repositions
- http://www.edlproject.eu/
- http://books.google.com/googlebooks/library.html
- http://www.wikipedia.org/
- http://www.nasa.gov/
- http://wikieducator.org/Learing4Content
- http://www.eduworks.com/index.php/Publications/Learning-Object-Tutorial.html
- http://oscar.iitc.ac.in/aboutOscar.do
- (http://www.tess-india.edu.in/ esa OER ,oa ohfM;ks)

Proficiency in English
(D.El.Ed First year)
Question Paper -6

Unit 1- Status of English in India

- English as a global language
- English as a Language of Science & Technology.
- English as a library language.

Unit 2- Listening & Speaking.

- Phonetics and phonology- How sounds are produced, transmitted and received; stress, rhythm and intonation in pronuciation.

Unit 3- Reading.

- Importance of reading
- Reading strategies – word attack, inference, extrapolation

Unit 4- Writing.

- Mechanics of writing-strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation.
- Different forms of writing- formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (bio data/CV) writing.
- Controlled and guided writing with verbal and visual inputs
- Free and creative writing.

Unit 5- Vocabulary & Grammar in context

- Synonyms, antonyms, homophones.
- Word formation- prefix, suffix, compounding
- Parts of speech
- Tense, modals
- Articles, determiners
- Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory)

Mode of Transaction

The teaching would be done on the basis of
(a) Group work
(b) Work shop
(c) Seminar
(d) Actual classroom teaching.

Assignment

Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested Activities for Active learning-

- Group discussions,
- Speech, debate
- Paragraph writing.
- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Using Phonemic drills.
- Organizing listening and speaking activities
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Search for websites that support listening and speaking
- Download relevant audio clips
- Interpreting tables, graphs, diagrams, pictures
- Reading different types of texts (descriptions, conversations, narratives, biographical sketches, plays, essays, poems, screen play, letters, reports)
- Searching for texts for reading for Primary level of learners.
- Searching for websites and apps that promote language games.
- Writing individually and refining through collaboration.
- Writing dialogues, speeches, poems, short stories, short essays.
- Describing events, processes.
- Downloading and printing cursive writing exercises.

डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)
योग शिक्षा
Yoga Education
(प्रश्नपत्र–7)

इकाई–1 योग का परिचय (Introduction to Yoga)

- योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग व व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम– सूक्ष्म यौगिक क्रियायें, षिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए योग का महत्व।
- योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– पतञजलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषदकाल, रामायणकाल महाभारतकाल) सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग बौद्ध धर्म एवं योग।

इकाई–2 पतञजलि के समय और पतंजलि के पश्चात योग का विकास (Patanjali Yoga and post patanjali developments)

- महर्षि पतञंजलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतञजलि का योग के क्षेत्र में योगदान।
- पतञजलि के पश्चात योग का विकास– योग के विभिन्न ग्रथों का सामान्य परिचय–योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुर्नजागरण।
- योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान जैसे– कैवल्यधाम लोनावाला, बिहार योग विद्यालय मुंगेर, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर, दिव्य जीवन संघ षिवानन्द आश्रम, ऋषिकेष, मोरार जी देषाई राष्ट्रीय योग अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, पतञजलि योगपीठ हरिद्वार।

इकाई–3 योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियाँ (Calucation and other Important system of Yoga and meditation)

- ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्व।
- पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, ध्यानयोग– (गीता, अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जप ध्यान, अजपाध्यान, पतञजलि के आधार पर ध्यान पद्धति।
- प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देष्य।

इकाई–4 शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physilogy and mental health)

- शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव–परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिकातन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र।
- अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव।
- मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

सत्रगत कार्य –

1. योग केन्द्र का भ्रमण करना और केन्द्र में आयोजित गतिविधियों पर आधारित प्रतिवेदन लिखना।
2. किसी एक योग अभ्यासकर्ता का साक्षात्कार लेना और उसके द्वारा अनुभव किए गए लाभों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
3. योगासनों से सम्बन्धित जानकारी आधिकारिक स्त्रोतों से एकत्रित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4. अपने सहयोगी समूह के समक्ष किसी पांच आसनों को प्रदर्शित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

क) ध्यानात्मक आसन – सुखासन, अर्ध पद्मासन, पद्मासन, सिद्धासन, सिद्धयोनिआसन, बज्रासन।

ख) विश्रामात्मक आसन – योगनिद्रा, शवासन, मकरासन।

ग) खड़े होकर किये जाने वाले आसन – ताड़ासान, पादहस्तासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, गरुणासन, उत्तानासन, अर्धकटिचक्रासन, उत्कटासन, पादांगुष्ठासन, वीरभद्रासन।

घ) बैठकर किये जाने वाले आसन– बद्धकोणासन, वक्रासन, पश्चिमोत्तासन, शशांकासन, गोमुखासन–1 एवं2, वीरासन, मारिच्यासन, जानुशीर्षासन, उष्ट्रासन, योगमुद्रा, सुप्त बज्रासन।

प्राणायाम

नाड़ी शोधन प्राणायाम, कपालभाति, भ्रामरी प्राणायाम, शीतली प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम, शीतकारी प्राणायाम तथा उज्जायी प्राणायाम।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रो का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

सुझावात्मक संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पातञजलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्दनन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञजलि योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
हिन्दी भाषा शिक्षण
Hindi Language Teaching
(प्रश्न पत्र– 8)

इकाई 1 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया

- हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
- माध्यम भाषा/ प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस संदर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया
- शिक्षण की भूमिका

इकाई 2 हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल

- सुनना और इस कौशल से क्या आशय है।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास संबधी गतिविधियाँ
- बोलने के कौशल का आशय
- हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, संभाषण, विडियो, सिनेमा)

इकाई 3 भाषा शिक्षण के कौशल

- पढ़ना कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा कक्षा में पढ़ने के कौशल से संबधित गतिविधियाँ –विषयवस्तु का वाचन, वाचन पश्चात् अपने अनुभव से जोड़ना–1 विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनंद उठाना।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में पढ़ने के कौशल विकास के लिए रणनीति – पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।
- लेखन के कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा की कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ।

इकाई 4 गद्य और पद्य शिक्षण

- गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- हिन्दी भाषा को कक्षा, लेख, व्यंग, निबंध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

इकाई 5 व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षा के स्तरानुरूप व्याकरण तत्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण
- व्याकरण के खेल/गतिविधि

इकाई 6 मूल्यांकन

- हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन
- हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन का रख–रखाव, टीप लिखना, फीडबैक

सत्रगत कार्य (Assignments) कोई तीन प्रायोजना कार्य कीजिए–

1. सुनना कौशल पर आधारित ऑडियो तैयार करना जिसमें विभिन्न प्रकार की आवाजों को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. किसी एक कथा की भाषा की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर प्रतिवेदन तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के प्ब्ज का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
संस्कृत भाषा शिक्षण
Sanskrit Education
(प्रश्नपत्र–8) (वैकल्पिक)

इकाई 1– संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य
- द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत की कक्षा का स्वरूप
- भाषा का अधिग्रहण और इसके संदर्भ में कक्षा की प्रक्रियाएँ
- द्वितीय भाषा के शिक्षण के रूप में संस्कृत शिक्षक की भूमिका

इकाई 2– भाषा शिक्षण के कौशल–सुनना

- सुनने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में श्रवण कौशल के विकास की गतिविधियाँ
- बोलने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में बोलने के कौशल के विकास की गतिविधियाँ

(संस्कृत गीत, कहानी, संवाद, संभाषण आदि के द्वारा)

इकाई 3– भाषा शिक्षण के कौशल–पढ़ना

- पढ़ना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में पठन गतिविधियाँ– पाठ्यपुस्तक को संस्कृत माध्यम से पढ़ना, पढ़कर उसे अनुभवों से जोड़ना, विविध तरह की पाठ्यसामग्री को पढ़कर उसका आनंद ले पाना।
- संस्कृत की कक्षा में पढ़ने की रणनीतियाँ– किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने से पूर्व पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ
- लिखना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में बच्चों को मौलिक लेखन के कौशल के विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ।

इकाई 4– गद्य एवं पद्य शिक्षण

- गद्य एवं पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- संस्कृत की कहानी, आलेख, निबंध आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ
- संस्कृत की कविता, गीत, श्लोक आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

इकाई 5– व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षानुसार व्याकरण के तत्वों को रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के तरीके
- व्याकरण के खेल/गतिविधियाँ

इकाई 6– मूल्यांकन

- संस्कृत की कक्षा में रचनात्मक (मौलिक/लिखित) मूल्यांकन
- संस्कृत की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- मूल्यांकन/आकलन के दस्तावेजों का संधारण, टिप्पणी लेखन, फीडबैंक

सत्रगत कार्य / Assignments कोई तीन करना है।

1. बहुभाषिक कक्षा को संसाधन के रूप में उपयोग में लाते हुए पाठ योजना तैयार करना।
2. संस्कृत सुनने एवं बोलने के कौशल के विकास हेतु कक्षा की गतिविधियाँ तैयार करना व उनका प्रदर्षन करना जैसे– कहानी, कविता सुनाकर उन पर बात करना।
3. अलग–अलग विधाओं के पाठ को पढ़कर उन पर अपनी राय रखना, सारांश लिखना, प्रश्न बनाना जैसी गतिविधियाँ करना।
4. विभिन्न पाठ्यपुस्तकों (निजी प्रकाशन/राज्य की) के पाठों का विश्लेषण करना व रिपोर्ट तैयार करना।
5. प्रादेशिक गीत, लोककथाओं, कहावतों का संकलन करना।

Pedagogy of English Language

First year

(For primary)

(Question Paper - 9)

Unit 1- Teaching of English at the Elementary level

- Issues of learning English in a multilingual' multicultural society.
- Issues of teaching Englilsh as second language at (a) Early primary- class I and II, (b) Primary- class III, IV and V.
- Learner socio-Cultural background and need learning English

Unit 2- Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English

- The cognitive and constructive approach-nature and role of learner, catering to different types of learners, age, of learning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors.
- Behaviouristic approach- direct method, grammar- translation method, structural, approval, communicative approach, state specific methods- Activity Based Learning (ABL) and Active learning Methodology (ALM).

The internal assessment will be done on the following two sub-sections

Unit 3- Classroom transaction process.

- Stating learning outcomes and achieving them
- Pair work, group work
- Use of story telling, role play, drama, songs as pedagogical tools.
- Pre-reading, reading and Post-reading, objectives and procsses.
- Questioning to promote thinking.
- Dealing with textual exercises.

The internal assessment will be done on the following section-
A. Preparing teaching plan (five) using constructive approch and including at least Three of the following activities:

1. Pair work
2. group work
3. story telling
4. role-play
5. drama
6. songs/rhymes
7. questioning to promote thinking.

B. Peer analysis of the lession plan

C. Suggested ICT activities

- Searching and downloading lesson plan based on constructivist approch
- Edit, moderate and contextalize at least one leasson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone)

Unit 4- Curriculum, textbook and material development.

- Preparing material for young learners.
- Using local resources.
- Using open resource (OER's) text, video, audio
- Analyzing and receiving teaching- learning materials and OER's.
- Academic standards, learning indicators and learning outcomes.
- Need and process of curriculum revision
- Text analysis of school textbooks for English

Unit 5- Planning & Assessment

- Planning for teaching
- Year plan, unit plan and period plan.
- Teachers' reflection on their own teaching learning practices
- Continuous and comprehensive evaluation (CCE)
- Monitoring of learning and giving feed back

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work
(b) Work shop
(c) Seminar & actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.
- Checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- Critical reading of specific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5 Suggested activities for active learning.
- Group discussion with Bal cabinet, SC
- Speech, debate on issues of teaching- learning English
- Short essay.
- Short digital presentation on issues of teaching- learning English.
- Search and download open educational resources for Madhya Pradesh preferably in Hindi.

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
गणित शिक्षण
(पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक के लिए)
Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)
(प्रश्न पत्र –10)

इकाई 1 : गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)

- गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ–कहाँ है?
- हम गणित क्यों पढ़ाते हैं?
- दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता व महत्व है?
- गणित के आयाम : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक व भाषा।
- गणितीकरण।

इकाई 2 : गणित– शिक्षण सिद्धान्त और शिक्षण विधियाँ (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)

- सीखने वाले को समझना
- सीखने की प्रक्रिया को समझना
- सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ
- गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ– आगमनात्मक और निगमनात्मक

(Induction and Deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त

इकाई 3 : गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ (Counting, Numbers and its Operations)

- संख्या–पूर्व अवधारणाएँ।
- संख्या की समझ एवं प्रस्तुति।
- अंक और संख्या।
- गणना और स्थानीयमान।
- भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति।
- संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

इकाई 4 : ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)

- आकृतियों की समझ– परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर।
- गणित में विभिन्न आकारों की समझ।
- पैटर्न– परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार।
- संख्याओं और आकृतियों में पैटर्न की समझ।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)

- गणित शिक्षण के लिए विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि– संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक।
- विषय (जैमउम), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव।
- अकादमिक मानक और सीखने के संकेतक।
- गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अंतरण (Transaction) के लिए अधिगम स्त्रोत (Learning Resources)।

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं आकलन (मूल्यांकन)

- शिक्षण तैयारी : गणित शिक्षण के लिए योजना, वार्षिक येाजना, इकाई योजना और कालखंड योजना।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- आकलन व मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आकलन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन,

रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वेटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रिपोर्टिंग, रिकार्ड एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignments)

सत्रगत कार्य अंतर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे। (कोई दो)

- एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
- ज्यो (GEO) बोर्ड का निर्माण एवं कक्षा–शिक्षण में इसका उपयोग करना।
- संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण ।
- कागज को मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना।
- भिन्न डिस्क का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
- पथ के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
- पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
- गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना।
- बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना।
- इंटर्नशिप की
  शाला मे गणितीय
  कोने (डंजी ब्वतदमत) की स्थापना करना।
- अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेल का संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना।
- अपने साथी छात्राध्यापक के गणित कक्षा शिक्षण (कम से कम 5) का विशेलषणात्मक अवलोकन करना।
- विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के पाठ –योजना तैयार करना।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

व्यावहारिक

प्रथम वर्ष

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

स्वबोध
Towards Self-Understanding
(व्यावहारिक–1)

प्रथम कड़ी

इस कड़ी मे छात्राध्यापको द्वारा लेखन कार्य किया जाएगा । लेखनकार्य निम्नलिखित दो तरीकों किया जा सकता है –

दैनंदिनी लेखन – इसके अंतर्गत छात्राध्यापक नियमित दैनंदिनी लिखेंगे। दैनंदिनी के बिन्दु स्पष्ट हो। यह दैनंदिनी दिनचर्या एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के कारण दिनचर्या एवं स्वयं के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों एवं अनुभवों पर आधारित हो।

दैनंदिनी लेखन के उद्देश्य

- छात्राध्यापकों के जीवन के अनुभवों, घटनाओं के अवलोकन तथा मन में उठने वाले विचारों व मुद्दों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए सजग करना। इस प्रकार उनमें चिंतनशीलता और आत्म समीक्षात्मक चिंतन को विकसित करना।
- छात्राध्यापकों और संकाय सदस्यों के बीच अंतः सम्वाद स्थापित करना और इस तरह उनके व्यक्तित्व का विकास करना।
- प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा नियमित दैनंदिनी लिखी जाएगी। इसमें वे दिनांक डालते हुए निम्नलिखित विषयों पर अपने अनुभव लिखेंगें–
  (अ.) अपने जीवन में होने वाली किसी विशिष्ट घटनाओं जैसे कोई पुरस्कार प्राप्ति, किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात, कोई पढ़ी गयी पुस्तक आदि पर अपनी प्रतिक्रिया लिखेगें।
  (ब.) समसामयिक विषय या मुद्दे पर अपने विचार लिखना ।
  (स.) ऐसी शैक्षिक समस्या जिसका वे सामना कर रहे हो उस पर अपने विचार लिखना।

अन्य लेखन – इसके अंतर्गत अपने जीवन से सम्बधित अनुभवों का लेखन कार्य किया जाएगा।

अन्य लेखन कार्य के उद्देश्य

- छात्राध्यापकों को अपनी शैक्षणिक यात्रा को याद दिलाना, जिसके अंतर्गत उनके विद्यालय, शिक्षक, शैक्षिक वातावरण आदि शामिल होगें जिससे उनकी आकांक्षाएँ और उम्मीदों ने एक स्वरूप ग्रहण किया। इन विषयों पर चिंतन करते हुए अपने अनुभव और अभिमत लिखना।
- एक समय अंतराल के बाद अर्थात डी.एल.एड. के एक वर्ष पूर्ण होने पर अपनी स्थिति और परिवेश पर लिखना ।
- आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया, उसे लिखना। उपर्युक्त आधार पर अपने अनुभवों को व्यक्त करना।

कार्यशाला और सेमिनार के सामान्य उद्देश्य

''शिक्षक वही पढ़ाते हैं जो वह जानते हैं और वही सिखाते है जो उनके व्यक्तित्व में है।''– इस कथन का तात्पर्य यह है, कि अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षक के व्यवसाय में सफलता तभी होती है जब शिक्षक का व्यक्तित्व बहुआयामी और सुदृढ़ हो। शिक्षा और शिक्षण में शिक्षक के धैर्यवान, विवेकशील, सजग और सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक को आत्म समीक्षा और आत्मावलोकन द्वारा अपने व्यक्तित्व विकास के अवसर प्राप्त होने चाहिए । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्यशाला व सेमिनार आयोजित किए जाएगें।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) –

कार्यशाला व संगोष्ठी के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित है।–

- छात्राध्यापकों में स्व बोध का विकास करना ताकि वे अपने सीखने और अपने विद्यार्थियों को सिखाने की जिम्मेदारी ले सकें।
- छात्राध्यापकों में आत्मसमीक्षा की क्षमता का विकास करना ताकि वे अपने व्यक्तित्व और पहचान को गढ़ने वाले कारकों को जान सकें।
- छात्राध्यापको को अपनी चिंतन–शैली, प्रेरणा और व्यवहार के प्रति सजग करना ताकि वे खुले दिमाग से नया कुछ सीखने को तैयार रहे, और स्वंय को ज्ञान और कर्म के नवीन स्त्रोतों की और उन्मुख रखें।
- छात्राध्यापकों को सामाजिक संबंधों के प्रति संवेदनशील बनाना ताकि वे विद्यार्थियों व स्वयं की सामाजिक परिस्थितियों के प्रति जागरूक होकर व्यवहार कर सकें।
- छात्राध्यापक स्वंय की आन्तरिक दुनिया और बाह्य दुनिया से सामंजस्य स्थापित कर सकें।

फिल्म, कला, थिएटर और सीखना

उद्देश्य

- फिल्म, नाटक और कला के विविध रूपों से परिचित होना और उनके शैक्षणिक महत्व को जानना।
- देखे गए फिल्म, नाटक और कला की समीक्षा करना।
- दृश्य माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना।
- विभिन्न कला रूपों की सराहना करना। उन मापदण्डों को समझना जिनसे एक कला रूप सार्थक होता है।
- अशाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यमों को समझना और स्वंय उनका प्रयोग करना।

गतिविधियां –

- शैक्षिक महत्व की फिल्म और नाटक देखना और उनकी समीक्षा करना।
- फिल्म या नाटक के किसी एक दृश्य का विश्लेषण करना।
- रेखाकंन चित्रकला आदि दृश्य माध्यमों को देखना और स्वंय उनमें से किसी एक को बनाना।
- थिएटर गेम्स में भाग लेकर शरीर संतुलन, शारीरिक गति में सामंजस्य और आपसी सहयोग की भावना को विकसित करना।

जीवन की प्रमुख घटनाएँ एवं अनुभव –

- छात्राध्यापकों को उन प्रमुख कारकों के प्रति सजग करना जिससे उनके जीवन का स्वरूप निर्धारित हुआ।
- छात्राध्यापकों के द्वारा स्वंय के जीवन की किसी प्रमुख घटना या अनुभव को आज के संदर्भ में परखना।
- छात्राध्यापकों द्वारा उनके एक दूसरे के जीवन की घटनाओं या अनुभवों को जानना और उनसे सीख लेना।

गतिविधियां

- छात्राध्यापक अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं और अनुभवों को समय–आरेख (ज्पउम सपदम), मानस चित्रण (Mind map), पोस्टर या अन्य किसी तरीके से व्यक्त करेंगें।
- छात्राध्यापक अपने जीवन की किसी एक प्रमुख घटना या अनुभव पर केन्द्रित होकर विचार करेगें कि
    - घटना/अनुभव कैसा था ?
    - घटना/अनुभव का क्या प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा ?
    - आज के संदर्भ में उस घटना/अनुभव का क्या महत्व है?
    - छात्राध्यापक समूहों में घटना/अनुभव को साझा कर उन पर बातचीत करेंगें।

कार्यशाला स्वयं की पहचान– प्रथम
(शरीर –स्थूल, सूक्ष्म, एवं कारण, शरीर, ज्ञानेन्द्रिया एवं पञ्च प्राण)
उद्देश्य–

- स्वयं के शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, एवं कारण)के प्रति परिचित होना।
- शरीर के निर्माण तत्वों (महाभूतों) एवं उनके गुणों से परिचित होना।
- स्वयं की ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के प्रति समझ विकसित करना।
- जड़ एवं चेतन तत्वों (पदार्थो) के प्रति समझ विकसित करना।
- स्वयं के श्वास/प्रश्वास अर्थात् प्राणों के बारे में समझ विकसित करना।

गतिविधियाँ–

- विद्यार्थि स्वयं के व्यक्तित्व का विशलेषण कर स्वयं की सकारात्मक विशेषताओं के साथ कमजोरियों की सूची बनाते हुए स्वयं में क्रमशः होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों का विवरण लिखे

कार्यशाला – स्वयं की पहचान– द्वितीय
(अवस्थाओं – जाग्रत, स्वप्न, एवं सुषुप्ति, पञ्च कोष– अन्नमय
प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोष, आत्म तत्व की समझ)
उद्देश्य :–

- छात्राध्यापकों को स्वयं की जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्ति के प्रति समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को स्वयं का शरीर किन–किन कोषों से बना है इन कोषों को प्रति समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों में 'मैं कौन हूँ' की समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों में आत्म तत्व की सर्वोत्कृष्ट प्रियता की समझ विकसित करना।

संगोष्ठी के विषय –
संगोष्ठी निम्नलिखित चार विषयों पर आयोजित किए जाएँगे।

- भारत में विभिन्न प्रकार के बच्चों की झलक : (ग्रामीण, शहरी, श्रमिक, सुदूर पहाड़ी क्षेत्र, विभिन्न राज्यों के बच्चे आदि)
- समाज में विज्ञान और धर्म की भूमिका (विभिन्न धर्मों जैसे सनातन धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाईधर्म, जैन धर्म, एवं बौध धर्म आदि के लक्षण, स्वरूप एवं सदगुण)
- भारत में प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा का स्वरूप
- प्रमुख शिक्षाविदों के (महात्मा गाँधी, श्री अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, गिजूभाई बधेका) शैक्षिक चिंतन।

कार्यशाला व संगोष्ठी अंतरण की विधि

- कार्यशाला व संगोष्ठी को आयोजित करने के लिए एक संकाय सदस्य को जिम्मेदारी दी जाएगी।
- कार्यशाला के लिए 4–6 दिन, 1 दिवसीय या 2 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी।
- संगोष्ठी के लिए 2–4 दिन, अर्द्धदिवसीय या पूर्ण दिवसीय (1दिन) संगोष्ठी हेतु निर्धारित होगे।
- सप्ताह में प्रतिदिन एक कालखण्ड होगा जिसमें संकाय सदस्य कार्यशाला या संगोष्ठी की तैयारी कराऍगे।

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा
Creative Drama, Fine Art and Education
व्यावहारिक–2

इकाई 1 – नाटक की अवधारणा, प्रकार, गतिविधियां, कार्य योजनाएँ–

रचनात्मक नाटक : महत्वपूर्ण क्षेत्र :–

- जीवन को समझना। जीवन से सीखना, इसके अभ्यास के लिए शिक्षक द्वारा गतिविधियों का आयोजन करना और बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव से गुजारना।
- सामाजिक विभिन्नताओं एवं विषमताओं एवं विशेषताओं को पहचानना और दूसरों के सन्दर्भ में स्वयं को रखकर देख पाना।
- अपने अवलोकन को पैना बनाना और समान परिस्थिति को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करना।
- सामान्य दिखाई देने वाली परिस्थितियों को व्यापक सन्दर्भ में समझना।
- रोजमर्रा के जीवन में होने वाले परिवर्तन के कारण और उनके परिणामों की पहचान करना।
- कक्षा की खोजों और उसके बाहर की दुनिया की परिस्थितियों और घटनाओं से जुड़ाव का विश्लेषण और उस पर लगातार अपनी प्रतिक्रिया देना सीखना।

रचनात्मक नाटक की गतिविधियाँ

- नुक्कड़ नाटक : सामाजिक, शैक्षिक, मूल्य आधारित
- एकल अभिनय
- एकांकी
- नृत्य नाटिका
- लोक नाट्य
- इंटर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय पाठ आधारित नाटकों का मंचन छात्रों से करवाएँ।
- इंटर्नशिप के दौरान पाठ पर आधारित कहानियों को नाटक में प्रस्तुत करने छात्रों को प्रोत्साहित करें
- नाटकों में तकनीक का उपयोग कर प्रस्तुति करना देना।

ईकाई – 2 – ललित कला : औचित्य और लक्ष्य

ललित कला का उद्देश्य विभिन्न कलाओं, क्राफ्ट, संस्कृति, सौन्दर्यबोध, स्वास्थ्य और आजीविका के बीच के अर्न्तसम्बन्धों को समझना है। साथ ही लोक कलाओं एवं शास्त्रीय विधाओं का प्रदर्शन और उनका आदान प्रदान कर कला प्रक्रिया, उत्पाद एवं प्रदर्शनों के विभिन्न आयामों के साथ जुड़ना एवं उन्हें सराहना भी ले। कला रूपों के माध्यम से छात्र और शिक्षकों में सौंदर्यबोध और गुणवत्ता पूर्ण जीवन के अनिवार्य पक्ष के रूप में सौन्दर्य एवं सामंजस्य को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।

विशिष्ट उद्देश्य (Sepecific Object)

- विभिन्न ललित कलाओं की समझ विकसित करना एवं कक्षा शिक्षा से जोड़ना।
- ललित कला के विभिन्न रूपों की सराहना करना एवं शिक्षा के आधार के रूप में कला को जानना।
- परम्परागत कला के प्रकारों को समझना और स्वयं कार्य करना।
- दृश्य कला एवं हस्तकला का उपयोग करते हुए कला कृतियों को बनाना एवं प्रदर्शन करना।
- मेला/जन उत्सव में विभिन्न कलाओं के प्रदर्शन हेतु प्रोजेक्ट तैयार करना।
- स्वयं का मूल्यांकन एक कलाकार और कला शिक्षक के रूप में करना।
- ललित कला के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने हेतु अवसर प्रदान करना।

- प्रदर्शनकारी कलाओं की प्रस्तुति हेतु बाल मेला/प्रदर्शनी का आयोजन करना
- कला शिक्षा की मौजूदा प्रक्रियाओं की समालोचना करते हुए परिवर्तन के लिए संभावित परिदृश्य को विकसित करना।

ललित कला :

- किसी हस्तकला दीर्घा, कला संग्रहालय, जैसे स्थानों का भ्रमण करना और इस अनुभव के बारे में समूह में चर्चा करना।
- छोटे समूहों के साथ हस्तकला, जनजातीय कला और संगीत के अभ्यास आयोजित करना तथा उन पर चर्चा करना।
- विविध कला माध्यमों का उपयोग करते हुए कला कृतियों की रचना करना जैसे : पानी, कागज़, क्रियॉन, आइल पेंट, केनवास आदि के माध्यम से लाइन, रूप, संयोजन, रंग, स्थान विभाजन आदि के बारे में सीखना, स्वतंत्र चित्र बनाना, कोलाज़ बनाना, चित्रकला बनाना।
- सिनेमा एक कला के रूप में मूल्यांकन करना, सीखना और हमारे जीवन पर इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभाव को समझना।
- सामाजिक एवं शैक्षणिक मुद्दों पर आधारित चर्चित वैकल्पिक फिल्मों को दिखाकर उन पर चर्चा करना।
- नाटक और साहित्य को पढ़ना और उनका आनन्द लेना।
- वास्तु विरासत की गहरी समझ विकसित करना। स्थानीय ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण करना और उनमें निहित सौंदर्य शास्त्र का मूल्यांकन करना।

सत्रगत कार्य (Assignment)

- परिवार में प्रचलित ऐसी परंपराओं की जानकारी एकत्र करें जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है।
- अपने अंचल में प्रचलित मांडना, गोदना, मेहंदी, महावर आदि में उपयोग की जाने वाली आकृतियों की सूची बनाएँ, उनके चित्र एकत्रित करें।
- अपनी रुचिनुसार मांडना, गोदना, महावर आदि को कॉपी में बनाएँ। आप उनमें किस तरह की विविधता लाना चाहेंगे?
- आपके क्षेत्र में उपस्थित सांस्कृतिक धरोहरों (वास्तुकला या मूर्तिकला के) की सूची बनाएँ।

सुझावात्मक संदर्भ सूची –

- एन.सी.एफ. 2000, एन.सी.एफ. 2005, NCERT न्यू दिल्ली
- आधार पत्र– कला शिक्षा
- दिवास्वप्न गिजूभाई बधेका NCERT न्यू दिल्ली
- कला कारीगरी की शिक्षा– गिजू भाई बधेका का भाग– 1,2
- हर दिवस कला दिवस – डॉ. पवन सुधीर वीडियो NCERT
- बेसिक एज्यूकेशन – बेनीप्रसाद
- शिक्षा का वाहन कला – देवीप्रसाद
- बच्चों के लिए खेल– क्रियाएँ – मीना स्वामीनाथन
- लोक संस्कृति – बंसन्त निरगुणे
- प्रतिमा विज्ञान – डॉ. इन्दुमती मिश्र (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी)

डी.एल.एल प्रथम वर्ष
बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा
Children's Physical - Emotional, Health, and Health Education
व्यावहारिक–3

इकाई 1. स्वास्थ्य एवं कल्याण की समझ

- स्वास्थ्य एवं कल्याण का अर्थ
- जैवचिकित्सीय बनाम सामाजिक स्वास्थ्य प्रतिमान
- दरिद्रता, असमानता एवं सेहत के अंतर्सम्बन्ध की समझ
- सामाजिक स्वास्थ्य के कारण एवं निर्धारक तत्व–स्तरीकृत संरचना, भोजन, आजीविका, ठिकाना, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच।

इकाई 2. बच्चों के स्वास्थ्य की समझ

- स्वास्थ्य और शिक्षा के बीच संबंध
- बाल्यावस्था और स्वास्थ्य, भूख और कुपोषण अर्थ और उपाय, देश और राज्य की स्थिति
- मृत्यु/रूग्णता चित्रण – विधियाँ, अवलोकन, दैनिक टिप्पणी
- बच्चों के स्वास्थ्य की अनुभूति, स्वयं के स्वास्थ्य के आकलन को समझने की विधियाँ

इकाई 3. विद्यालय के संदर्भ में बच्चों का स्वास्थ्य

- मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम, औचित्य, उद्देश्य, घटक
- कार्य पद्धति, कक्षा की जिज्ञासा की अवधारणा
- शालेय स्वास्थ्य का मापन– जल, स्वच्छता एवं शौचालय इत्यादि संबंधी मुद्दे
- कार्यक्रमों की संस्कृति की संकल्पना
- शिक्षक की भूमिका एवं कार्यक्रम संबंधी वचनबद्धता
- बच्चों में भोजन, कार्य, खेल, मध्यान्ह भोजन संबंधी बोध

अध्ययन की इकाईयों वाला खण्ड, प्रत्येक पाठ्यवस्तु के अन्तरण की प्रणाली में इस विचार को शामिल करता है कि पाठ्यक्रम के भीतर सैद्धान्तिक अध्ययन के साथ–साथ प्रायोगिक कार्य भी समाहित हों।

सत्रगत कार्य (Assignment) : कोई तीन

प्रायोगिक कार्य स्कूल इन्टर्नशिप प्रोग्राम (SIP) के साथ जुड़ा है। इन्टर्नशिप के पहले तीन घण्टे और बाद में छः घण्टे। इंटर्नशिप के पहले इसमें चर्चा, मार्गदर्शन और इन्टर्नशिप के दौरान प्रोजेक्ट हेतु इनपुट और इंटर्नसिप के बाद कार्यशाला के रूप में इन पर चिन्तन चर्चा होती है, जिसमें छात्राध्यापक अपने प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी साझा करते हैं। प्रोजेक्ट के बारे में कुछ प्रकरण दिये गये हैं जो छात्रों को आवंटित किये जा सकते हैं। इन्टर्नशिप के पूर्व प्रकरण का विचार और उसके औचित्य, शोध–प्रणालियों और उपकरणों पर चर्चा होगी। प्रत्येक छात्राध्यापक इन्टर्नशिप में जाने के पहले एक प्रोजेक्ट की उपकरणों समेत पूरी योजना तैयार करके ले जायेंगे।

- स्कूल इन्टर्नशिप प्रोग्राम में किये जाने वाले अभ्यास में एक बच्चे का प्रोफाइल तैयार करना और इन्टर्नशिप के दौरान उसके सामाजिक सन्दर्भ को समझने के साथ ही इसे बच्चे के स्वास्थ्य से जोड़कर देखना और सभी संभावित निर्धारकों को समझना। छात्राध्यापक को बच्चे के स्वास्थ्य का अवलोकन कर उसके स्वास्थ्य की परिस्थितियों को समझना है। बच्चे के जीवन से जुड़े सम्भावित स्वास्थ्य निर्धारकों कोखोजने के लिए बच्चे का स्वास्थ्य प्रोफाइल तैयार रहना होगा। बसाहट/घर, परिवार की आजीविका गरीबी एवं बचत, खाने की आदतें, पानी की सुलभता, सुरक्षा आदि के मुद्दों का अवलोकन, अनौपचारिक समूह–चर्चा एवं समुदाय में भ्रमण के द्वारा खोजना होगा। संकाय सदस्य इन्टर्नशिप सेपहले छात्राध्यापकों को पद्धतियों, नैतिक मुद्दों, सवाल करते समय संवेदनशीलता आदि के बारे में दिशा–निर्देश देंगे।

- रुग्णता का पता लगाने के लिए अभ्यास करेंगे। इसमें छात्राध्यापक बच्चों की उपस्थिति को चिन्हित करेंगे और बच्चे की अनुपस्थिति के कारणों को पता लगाने का प्रयास करेंगे। वह बच्चों/साथियों केद्वारा बताई गई बीमारियों को दर्ज कर एक स्वास्थ्य रिपोर्ट कार्ड तैयार करेंगे।
- छात्राध्यापक स्कूल के स्वास्थ्य के लिए भी एक रिपोर्टकार्ड तैयार करेगे। इन्टर्नशिप के दौरान पानी, शौचालय, सफाई, भवन खेल का मार्ग आदि मापदण्डों के आधार पर सर्वे करेंगे। इसके माध्यम से छात्राध्यापक को प्रत्येक मापदण्ड (जिससे बच्चों के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है) के विभिन्न आयामों कीखोज करना बताना है। उदाहरण के लिए केवल यह पूछना पर्याप्त नहीं है कि स्कूल में शौचालय है? बल्कि यह जानना भी जरूरी है कि वह काम कर रहा है? क्या साफ–सुथरा है? क्या उसमें पानी उपलब्ध है? आदि। छात्राध्यापक विकसित उपकरणों का उपयोग करते हुए अवलोकनों को दर्ज करेंगे।
- छात्राध्यापक स्कूल में चल रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों को बताते हुए मध्यान्ह भोजन के बारे में बच्चों की अवधारणाओं को समझने के लिए रचनात्मक कार्य प्रणालियों का उपयोग करेंगे। वे मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों (जैसे– खाने की मात्रा, गुणवत्ता वितरण व्यवस्था, खाने की तहजीब आदि) का अवलोकन करें और उस पर टिप्पणी करें। साथ ही मध्यान्ह भोजन पर बच्चों की अवधारणाओं (जैसे–खाने में क्या पसन्द है? क्या नहीं?, स्कूल आने के पहले क्या खाते हैं? भूख लगने पर पढ़ाई कर पाते हैं? आदि) को औचित्व प्रदान करना। यह सब साक्षात्कार से पता नहीं लग सकता बल्कि इसके लिए रचनात्मक वर्कशीट भरवानी होगी। इकाई दो में इसे इंटर्नशिप से पहले छात्राध्यापकों के दिशानिर्देश में तैयार किया जायेगा।

इकाई 3 व 4 के अन्तर्गत इंटर्नशिप में जाने से पहले छात्राध्यापकों को चुने हुए स्वास्थ्य प्रसंगों को अन्य विषयों के साथ जोड़कर उन पर आधारित सामग्री/गतिविधियां/रणनीतियां बना लेना चाहिए। चुनी हुई प्रकरण या अवधारणा पर स्वास्थ्य शिक्षा की पाठयोजना तैयार कर इन्टर्नशिप के दौरान कक्षा में पढ़ानी चाहिए। स्वास्थ्य थीम से सम्बंधित विचार और सामग्री की पुष्टि हेतु शोध करके निम्नलिखित पर चिंतनशील रिपोर्ट बनानी चाहिए।

- योग – सिद्धान्त और आधारभूत आसन सीखना,
- एथलेटिक्स
- कोर्ट चिन्हांकन और टूर्नामेंट का आयोजन, आदि।

(यह रिपोर्ट आन्तरिक आकलन का एक हिस्सा होगी।)

इकाई 5 पर आधारित प्रायोगिक कार्य, बेसिक कसरते, ड्रिल, गतिविधियां और टीम के खेल (जैसे–खो–खो, कबड्डी, थ्रोबॉल, वॉलीबॉल, फुटबॉल आदि) डाइट स्तर पर सीखा/किया जाएगा। छात्राध्यापक को इन्हें करने की बेसिक पद्धतियों और तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए। इंटर्नशिप केदौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में शारीरिक शिक्षा से सम्बंध में हो रही गतिविधियों (जैसे– क्या खेलने के लिए पर्याप्त स्थान/उपकरण या सामान है?/ बालिका/बालक समान रूप से भाग लेते हैं? खेलों में तहजीब क्या है? क्या बच्चों को खेल में छोड़ दिया जाता है या शिक्षक भी सक्रिय हैं? विशेषज्ञ आवश्यकता वाले बच्चों के लिए क्या व्यवस्था है? आदि) का अवलोकन करना चाहिए तथा छात्राध्यापकों को परम्परागत और नये खेलों में विद्यार्थियों को शामिल करना चाहिए।
(छात्राध्यापकों को अपनी रिपोर्ट और निष्कर्षों को लिखना चाहिए, शिक्षक–प्रशिक्षकों को चर्चाओं के माध्यम से विभिन्न उन पर परामर्श देना होगा जिसमें शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्थान की कमी, आदि उत्पन्न बाधाओं के मामले में नवाचार द्वारा कक्षाओं का भली प्रकार से मार्गदर्शन हो सके।) प्रायोगिक कार्य को छात्राध्यापकों के बीच बांटा जा सकता है। इसमें प्रत्येक शिक्षक इसे ई.टी.ई. शिक्षकों की बड़ी कक्षा में जरूर साझा करें। इसमें स्वास्थ्य अवलोकनों, प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों, निष्कर्षों कार्यक्रमों की संस्कृति आदि पर चर्चा करके क्या सम्भावित कार्रवाई की जा सकती है पर चर्चा की जा सकती है। प्रोजेक्ट केवल बच्चों के स्वास्थ्य पर सूचनाएं एकत्र करना नहीं है बल्कि स्वास्थ्य के प्रति संवेदना और अन्वेषण और सीखने की प्रक्रिया से उसके जुड़ाव को मन में बिठाना है।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग, पीटी, जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

- चार्ट कैलेण्डर, मॉडल, आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
- हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है।
- स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्रम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबकेद्वारा प्रयत्नशील बनाने का प्रयास करना।
- पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष
शिक्षण अभ्यास एवं शाला इंटर्नशिप
(Teaching Practice and School Internship)
व्यावहारिक

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

बच्चों और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का व्यवस्थित रूप से अवलोकन करना।

- बच्चों से सामंजस्य और संवाद बनाना।
- बच्चों के विकास और शैक्षणिक दृष्टिकोण के संदर्भ में शाला की पाठ्यपुस्तकों और अन्य संसाधन सामग्री का समालोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- विभिन्न स्त्रोत सामग्री का ऐसा विविध संग्रह विकसित करना जिसे छात्राध्यापक बाद में अपने शिक्षण के दौरान प्रयोग कर सकें जैसे– पाठ्यपुस्तक, बाल साहित्य, खेल और गतिविधियाँ, भ्रमण इत्यादि।
- किसी एक अधिगम केन्द्र पर जाकर अभ्यास पर समालोचनात्मक चिंतन करना।
- कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के शाला विषयों के शिक्षण में सहभागिता करना।

कार्यक्रम के निम्न घटकों से उपरोक्त उद्देश्यो को प्रस्तावित अधिभार के साथ प्राप्त किया जा सकता है।

- छात्र प्रोफाइल विकसित करना– 10%
- पाठ्य पुस्तको और अन्य सामग्रियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना – 15%
- स्त्रोत सामग्री का विकास– 30%
- छात्रों के साथ बातचीत करना और उनका अवलोकन करना– 30%
- अधिगम केन्द्र का भ्रमण और रिपोर्ट करना– 15%

प्रथम वर्ष – इंटर्न करेंगें –

शाला इंटर्नशिप– शिक्षक प्रशिक्षकों के लिये निर्देश

1. शाला की एवं शाला के विद्यार्थियों की विशिष्ट विशेषताओं को समझने के लिये प्रोफाईल तैयार करें। प्रोफाइल सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अभिरूचि, विशेष अधिगम आवश्यकताओं स्वास्थ का स्तर, मध्यान भोजन, स्कूल स्वास्थवर्धक कार्यक्रम और बुनियादी ढाँचे के आधार पर तैयार की जाये। इस प्रोफाइल का स्वास्थ और शारिरिक शिक्षा के सत्रगत कार्य के रूप में मूल्यांकन किया जायेगा।
2. कक्षा में प्रयोग करने से पहले किसी एक स्त्रोत सामग्री (पाठ्यपुस्तक सहित) का समालोचनात्मक विश्लेषण करें। पाठ विश्लेषण में लिंग, धर्म, जाति और समुदाय की रूढ़िवादी सोच के आधार पर आकलन किया जायें।
3. अपनी सामग्री की रिपोर्ट स्वयं विकसित करें जिसमें बाल साहित्य, किताबें, प्रकाशक, संसांधन और विचार शामिल होना चाहिए।
4. किसी वैकल्पिक शाला में जा कर वहाँ के अभ्यासों का समालोचनात्मक अध्ययन करें, जो कक्षा कक्ष एवं शाला पर्यावरण के मुद्दो पर केन्द्रित हो जैसे– मनोवैज्ञानिक, भौतिक एवं सामाजिक, बच्चों से बातचीत, शिक्षकों का शिक्षण अभ्यास । वैकल्पिक रूप से ऐसे संस्थानों में कार्यरत लोगों को आमंत्रित कर उनकी सहायता लेकर उन संस्थानों की डाक्यूमेंटरी और फिल्म भी दिखाई जा सकती है।
5. विद्यार्थियों से बातचीत कर योजना बनाये और उसे लागू करें। एक कक्षा में 2 इंर्टन को रखा जा सकता है जब एक इंर्टन बच्चों के साथ बातचीत करे तो दूसरा उसे देखे और अपने अवलोकन को जर्नल में अंकित (Record) करे। पश्च्य संपर्क सत्र (Post Contact Session) के दौरान लगभग आधी बातचीत का रिकार्ड सुपरवाईज़र द्वारा आवश्यक रूप से अवलोकन किया जाये। जर्नल इंर्टन द्वारा संधारित किया जाये जिससे उसे स्वयं को समझने में मदद मिलेगी तथा अधिगमकर्ता और सामाजिक संदर्भ के प्रति उसकी रूढ़िवादी सोच का पता चलेगा।

द्वितीय वर्ष

सैद्धान्तिक विषय

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
संज्ञान, अधिगम और बाल विकास
(COGNITION LEARNING AND THE DEVELOPMENT OF CHILDREN)
(प्रश्न पत्र–11)

इकाई–1 अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया (Concept and process of Learning)

अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैंग्ने का वर्गीकरण)

- बच्चों के सीखने की प्रक्रिया : अधिगम एंव स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति।
- अधिगम एवं स्मृति : स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति, अधिगम का हस्तांतरण व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ।
- अधिगम की कइिनाईयों की अवधारणा एवं प्रकार।
- सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।

इकाई 2. बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया (Concept Formation and thinking childhood)

अवधारणा निर्माण :

- अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ।
- बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक।
- समय, स्थान, कार्य–कारण एवं स्वयं, की अवधारणाओं का विकास।
- अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल।
- पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धांत, पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार।

चिंतन एवं तर्क :

- चिंतन की अवधारणा एवं प्रकृति।
- चिंतन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिन्ह, सूत्र।
- चिंतन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ।
- चिंतन एवं अधिगम के बीच संबंध।

इकाई 3. संज्ञान एवं अधिगम (Cognition and Learning)

- निर्माणवाद : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएं एवं प्रक्रियायें, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वंद्व के लक्षण, शिक्षण अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व।
- वायगोत्सकी का सिद्धान्त : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता संबंधी नियम, जेडपीडी (ZPD) की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के संदर्भ में इसका महत्व।
- सूचना संप्रेषण उपागम : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान, कूटरचना (encoding) एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memori) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं।
- संज्ञान में वैयक्तिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर : अधिगम कठिनाईयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियां एवं प्रभाव।

इकाई 4. भाषा एवं सम्प्रेषण (Language and Communication)

- बच्चे किस तरह संप्रेषण करते हैं?
- भाषा विकास के संबंध में दृष्टिकोण : किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरुआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के संदर्भ में
- प्रारंभिक आयु में भाषा।
- स्किनर का सक्रिय अनुबंध का सिद्धांत सामाजिक अधिगम के बारे में बन्डूरा और वाल्टर का सिद्धान्त।
- जन्मजातवादी – चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण।
- व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से इन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों की तुलना।
- भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना।
- भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अंतर, भाषायी विविधता, बहु सांस्कृतिक कक्षा के लिए इसका महत्व।
- द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए इसका महत्व– बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।

इकाई 5. खेल, स्व एवं नैतिक विकास (Play, Self and Moral Deveopment)

- खेल का अर्थ, विशिष्टतायें एवं प्रकार।
- खेल एवं इसके कार्य : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा व स्नायु विकास (motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव।
- खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (group dynamics) : खेलों के नियम; बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं।
- स्वयं का बोध; स्व–विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व–नियंत्रण।
- नैतिक विकास : इस संदर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन्स का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।

सत्रगत कार्य (Assignment) -

- (Theme) थीम– बच्चों के संसार से क्या और कैसे–कैसे
- कुल घंटे– 25 (क्षेत्र पर + अभिलेख व्यवस्थापन और कक्षा कक्ष में चर्चा)
- 2 घंटे क्षेत्र पर लगाया गया समय/स्व अध्ययन 4 घंटे
- संपर्क 2 घंटे क्षेत्र पर + स्व–अध्ययन– 5 घंटे
- संपर्क 2 घंटे (क्षेत्र पर) 5 घंटे स्व अध्ययन के लिये

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष.
समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध
Understanding of Society, Education and Curriculum
(प्रश्न पत्र –12)

इकाई 1 : शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)

- मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्व
- विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच संबंध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियाओं की जांच पड़ताल
- विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉन्टेसरी, गांधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो,
- मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ

इकाई 2 : शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

- शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य)
- सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए शिक्षा
- निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के संबंध में समझना
- **अ.** सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बंटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता में असमानता और समानता
  ब. समता
  स. गुणवत्ता
  द. अधिकार एवं कर्तव्य, शाला प्रबंध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका
  ई. मानव एवं बाल अधिकार
  फ. सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएं, मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका

इकाई 3 : शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)

- ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा ।
- भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता में एवं उससे हटकर
- वर्ग, जाति, लिंग एवं धर्मों के संदर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका
- शिक्षा की राजनीतिक प्रकृति
- शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन

इकाई 4 : ज्ञान (Knowledge)

- बच्चे में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन करना
- ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना)
- मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा
- ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियायें
- पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड
- देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (NCF 2005)
- पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम
- बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन
- पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन

सत्रगत कार्य– कोई तीन

- विद्यार्थियों में सामाजिक विकास और सामाजिक बदलाव में शिक्षक की भूमिका चिन्हांकित करना।
- गतिविधियों एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन होता है इसे बच्चों के संदर्भ में वर्णित करना।
- वर्तमान शिक्षा में राजनीति का हस्तक्षेप– एक चिन्तन पर अपने विचार लिखना।
- विद्यालय स्तर पर निष्पक्षता और समानता के अवसरों की उपलब्धता पर एक रिर्पोट तैयार करें।

अंतरण की विधियां : (Mode of Transaction)

- समीक्षात्मक चिंतन व सवाल करना।
- संवाद और चर्चा।
- संगोष्ठियों/फिल्म, समूह कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, फील्ड वर्क, लेख/नीतियों एवं दस्तावेजों पर समीक्षात्मक चर्चा।
- इकाईयों को अंतर्सम्बंधित करते हुए शिक्षण कार्य।
- इकाईयों का अध्ययन कराते समय सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक संदर्भों का ध्यान रखा जाए।

डी.एल.एड.द्वितीय वर्ष
शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे
Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education
(प्रश्न पत्र–13)

इकाई 1. समावेशी शिक्षा Inclusive Education

- भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)।
- समावेशी शिक्षा का अर्थ।
- भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार।
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।

इकाई 2, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे Children with Special Needs

- विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक व समकालीन दृष्टिकोण।
- अधिगम कठिनाईयों के प्रकार।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम व कौशल।

इकाई 3. जेण्डर स्कूल एवं समाज (Gender, School and Society)

- पुरुषत्व व स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना।
- पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं व पहचानों के साथ
- स्कूल में जेण्डर पहचान को पुनः उभारना पाठचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा प्रक्रियायें एवं विद्यार्थी– अध्यापक बातचीत।
- कक्षा में जेण्डर समानता के लिए काम करना।

सत्रगत कार्य – कोई तीन

- अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्ततावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तेयार कीजिए।
- अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों को सूचीबद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए।
- अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाईए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपादेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
- अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहें प्रयास लिखिए।
- समावेशी शिक्षण के लिए स्कूल में बाधक तत्वों की पहचान करना और सकारात्मक वातावरण निर्माण के लिए सुझाव देना।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

- शालेय प्रक्रियाओं में जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेशण तथा बहिष्करण की स्थितियों का अवलोकन करवाना।
- शैक्षिक भ्रमण – बालिका छात्रावासों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाए जा रहे केन्द्रों का भ्रमण, बच्चों के साथ बातचीत करवाना।
- समाज में जेण्डर सम्बधित मुद्दों के उदाहरण द्वारा प्रशिक्षणार्थी को संवेदनशील बनाना।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास
(School culture, leadership and teacher development)
(प्रश्न पत्र–14)

इकाई–1 भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाएँ
Structure and processes of the Indian Education System

- विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार।
- शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही।
- शाला और सहयोगी संगठनों के मध्य संबंध।
- शालेय संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन क्या है? शालेय संस्कृति निर्माण में शालेय गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, वार्षिक उत्सव इत्यादि की क्या भूमिका है?

इकाई–2 शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड
School effectiveness and school standards

- शालेय प्रभावशीलता; क्या है, इसको कैसे मापेंगे?
- शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकास।
- कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक।
- समावेशित शिक्षा की पाठ–योजना, कक्षा–व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा।
- कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु–प्रज्ञता स्तर।

इकाई–3 शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन School Leadership and Management

- प्रशासनिक नेतृत्व।
- समूह नेतृत्व।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व।
- परिवर्तन के लिए नेतृत्व।
- बदलाव प्रबंधन।

इकाई–4 भिक्षा में बदलाव–सुगमता Change facilitation in Education

- सर्वशिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव।
- शिक्षा में समानता।
- बालिका शिक्षा–प्रोत्साहन और योजनाएँ।
- शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे।
- शिक्षा में परिवर्तन–तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।

इकाई–5 शिक्षक विकास की समझ Understanding Teacher Development

- शिक्षक–विकास, शिक्षक–शिक्षा और शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा।
- शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबंधन एवं समुदाय पर प्रभाव।
- भारत में शिक्षक–शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय।
- शिक्षक–शिक्षा प्रणाली के विषय में विभिन्न आयोगों और समितियों की अनुशंसाएं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक–शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।
- IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य।
- UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।

सत्रगत कार्य (Assingment) कोई तीन

इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक कार्य इस तरह से निर्धारित किया गया है, जो छात्राध्यापकों को कक्षा की चर्चाएँ और वास्तविक जमीनी अनुभवों (कक्षा शिक्षण) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने और बदलाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझ पाने में सहायता करें।

इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक कार्य इस तरह से निर्धारित किया गया है, जो छात्राध्यापकों को कक्षा की चर्चाएँ और वास्तविक जमीनी अनुभवों (कक्षा शिक्षण) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने और बदलाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझ पाने में सहायता करें।

1) विद्यालय की संस्कृति और संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कम से कम दो शालाओं में आयोजित होने वाली गतिविधियों का अवलोकन एवं रिर्पोट प्रस्तुत करना।
2) बालिका शिक्षा के लिए शासकीय प्रयास और उन प्रयासों का विद्यालय स्तर पर लागू करने की स्थिति का आकलन करते हुए रिर्पोट बनाए।
3) सर्वशिक्षा अभियान से शालेय शिक्षा में आये परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।
4) शाला और उनके सहयोगी संगठन के मध्य आपसी सम्बधों से शाला प्रबंधन का प्रभाव– एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
5) एक आदर्श विद्यालय के मापदण्ड क्या होना चाहिए? आलेख तैयार करें।
6) नेतृत्व बदलते ही प्रबंधन का बदलाव पर अपने अनुभव के आधार पर रिर्पोट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ Mode of Transaction

- चुने गए आलेखों को ध्यान से पढ़ना और उन पर चर्चा करना।
- शालेय प्रक्रियाओं का अवलोकन करना और उनके दस्तावेज तैयार करना।
- शैक्षिक भ्रमण : नवाचार केन्द्रों व विविध प्रकारों के स्कूलों का भ्रमण।

Proficiency in English
(D.El.Ed Second year)
Question Paper-15

Unit 1- Status of English in India

- English around us
- English as associated official language in multicultural India.
- English as second/foreign language

Unit 2- Listening & Speaking.

- Listening with comprehensive – simple instructions, public enhancements telephone convesation, radio/TV.
- Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role-play, interaction radio instruction (IRI) programms.
- Using role play, drama, story telling, poems, and songs as a pedagogical tool.
- Listining to oral discourses (speech, discussion, news, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)
- Producing oral discusses (speech, discussion, news sport, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)

Unit 3- Reading.

- Skills of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading about silent reading.
- Reading for global and local comprehension.
- Critical reading – process postultes and stratigres.

Unit 4- Writing.

- Writing text and identifying their features. Texts may include discriptions, conversation, narratives, biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notices, adverts, prochures etc.
- Editing text written by one self and others.
- Error analysis

Unit 5- Vocabulary & Grammar

- Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms.
- Word formation enrichment of vocabulary abbreviation
- Type of sentences (simple, complex and compound)
- Classification of clases based on structure and function
- Voice, narration.

Assignment

The internal assessment will be done on the following two sub-sections-

A- Suggested Activities for Active learning. -Any two

- Group discussions
- Talk for learning
- Speech, Debate
- Short Essay
- Organising listening and speaking activities.
- Giving and asking for feedback during or after oral discusses like speech, discussions, news reports, sports commentary, interviews etc)
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Reading different types of texts
- Organising reading activities like reaching clubs, speed reading competitions
- Writing individually and refining through collaboration
- Comerting one form of text into another eg a narrative text into dialogue, paraphrasing
- Writing different indings to stories
- Re-teling a story from a different characters perspective
- Reading passages and analyzing the distribution of type of sentences
- Developing a short essay in collaboration
- Arranging jumpled sentences in proper sequence

B- Suggested ICT activities. Any-2

- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Download and transfer to smart phone any three audio clips of speeches, discussions, interviews etc.
- Search for websites that support listening and speaking
- Search and download short videos on various reading activities as competitions.
- Search for websites which provide free or open source content such as storus, palms, play etc.
- Download and format for printing atleast three varities of writing texts (eg prose, poetry, drama etc)
- Downloading atleast one vocabulary games in a smart phone/tab
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

Mode of transaction

The teaching would be done –

a) Group work
b) Work shop
c) Seminar & actual classroom teaching.

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
योग शिक्षा
Yoga Education
(प्रश्नपत्र–16)

इकाई 1 – योगाभ्यास के सिद्धांत

आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियॉ, आसनों का वर्गीकरण– ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्यनमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियॉ एवं लाभ।

इकाई 2 – प्राणायाम

प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, मुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) उपप्राण– नाग, कूर्म कृंकल, देवदत्त, धनन्जय) प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियॉं।

इकाई 3 – बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियायें

बंध का अर्थ, प्रकार लाभ (जालंधर बंध, उड़िडयान बंध एवं मूलबंध) मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा) शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियॉं (धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभॉति)

इकाई 4 – भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान

महर्षि वषिष्ठ, महर्षि पतंजलि, आदिषंकरार्चाय, गुरू गौरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी विवेकानंद, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।

सत्रगत कार्य (Assignment)- कोई तीन

योग अभ्यास और गतिविधियाँ

1) अपने साथियों के समूह को प्राणायाम का अभ्यास कराना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
2) योगाभ्यास करने वाले व्यक्तियों का सर्वेक्षण करना और उनसे प्रश्नावली के माध्यम से एक रिपोर्ट तैयार करना।
3) ध्यान की किसी एक विधि को सीखना उसका अभ्यास करना। पन्द्रह दिन बाद अपने अनुभवों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4) किन्ही तीन विद्यालयों का भ्रमण कर, शालेय योग प्रतियोगिता पर रिर्पोट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ (Mode Of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रों का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण
(पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिए)
Pedagogy of Environmental Studies
(for Early Primary and Primary)
(प्रश्न पत्र – 17)

ईकाई 1– पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ (Concept of EVS)

- पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के संदर्भ में इसका विकासक्रम।
- एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ।
- पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, ''प्राशिका'' कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में ''एकलव्य'' का नवाचारी प्रयोग), एन सी एफ (NCF) 2000, एन सी एफ (NCF) 2005।

इकाई 2 : बच्चों के विचारों को समझना (Understanding Children's Ideas)

- प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएं ।
- बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियां।
- स्थान और समय की अवधारणा ।
- पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन)।
- पाठ्यपुस्तकों सहित पाठचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Sets) की समीक्षा (विश्लेषण)।

इकाई 3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन (Teaching of EVS and Assessment)

- पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रियाएं : प्रक्रिया कौषल–सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण,समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आंकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग।
- नक्शा व चित्र में अंतर करना, नक्शा पढ़ना।
- बच्चों के विचार व उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका।
- कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग।
- आंकलन एवं मूल्यांकन– परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- आंकलन की विभिन्न विधियां एवं भविष्य में अधिगम के लिए आकलन का उपयोग

इकाई 4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी (Planning for TeachingEVS)

- योजना को प्रभावषाली बनाने की आवष्यकता।
- पर्यावरण अध्ययन षिक्षण के कुछ उदाहरण।
- बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना।
- अवधारणा चित्र एवं थीमैटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)।
- इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग।
- संसाधन इकट्ठा करना।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग।
- दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री।
- प्रयोगशाला/विज्ञान किट।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियां (Textbooks and Pedagogy)

पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के संदर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्तः सामाजिक दार्षनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ

- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियां– बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सुविधादाता (**Facilitator**) के रूप में शिक्षक
- इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन
- अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड
- प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- चिंतनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ
- मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, सीसीई (CCE)
- चिंतनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) – अधिगम के लिए आंकलन, अधिगम का आंकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर
- किसी एक कक्षा के लिए पर्यावरण विषय पर पाँच चिन्तनशील प्रश्न तैयार करना।

सत्रगत कार्य

पाठयोजना निर्माण–पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी।

- Inter disciplinary, Multi diciplinary approach पर आधारित पाठयोजनाएँ
- ए.एल.एम. आधारित –पाठयोजनाएँ
- समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ, इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।
- इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव इादि।
- पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना– ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर।
- आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण – जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि।
- अध्यापन अभ्यास के दौरान स्टडी – सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/उद्दंड बालक।
- पाठ्यपुस्तक विश्लेषण – किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण ।
- स्थानीय स्त्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।
- किन्हीं दो बच्चों का पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की रिर्पोट तैयार करना।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
सामाजिक विज्ञान शिक्षण
Pedagogy of Social Science
(वैकल्पिक –प्रश्न पत्र–18)

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक संदर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के संबंध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी/सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के संबंध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केंद्रित, मुद्दा केंद्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अर्न्तविषयक सामाजिक विज्ञान।

इकाई 2 : सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय संबंधी दृष्अिकोण एवं कालक्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक–स्थानिक अंर्तक्रिया :–

1. समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण समुदाय एवं समूह
2. सभ्यता : इतिहास, संस्कृति
3. राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र–राज्य एवं नागरिक
4. क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग
5. बाजार : विनिमय

इकाई 3 बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां :

बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में माध्यमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के संदर्भ में इन कारकों का महत्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अर्न्तक्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिए समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण–अधिगम सामग्री, विषय के संबंध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते हैं, इसे समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, कहानियों/आख्यानों, संवाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं का अवलोकन।

इकाई 4 : शिक्षण शास्त्र एवं आकलन

शिक्षण विधियां : सामाजिक विज्ञान में अनुमान/खोज पद्धति, प्रॉजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना, अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आंकड़े, इसके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अंतर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिंतन के लिए निजी/प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्यांकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ

- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियां–बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सूत्रधार के रूप में शिक्षक।
- इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ।
- अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक।
- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन।

इकाई 6 : कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन

- शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- आकलन और मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता और महत्व
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (ब्ब्म)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignment)- (कोई तीन)

- प्रामाणिकता की दृष्टि से किसी ऐतिहासिक फिल्म/धारावाहिक या उपन्यास की समीक्षा। प्रामाणिकता के आकलन के लिए फिल्मों, किताबों, अखबारों के आलेख, प्रदर्शनियों और संग्रहालयों जैसे स्रोतों का उपयोग। ''तथ्यों'' की जटिल प्रकृति, उसके गठन और ''मत'' से उसके अंतरों को समझना।
- कसी स्थान को अपने शिक्षण संस्थानों से दूरी और दिशा के संदर्भ में नक्शे में अंकित करना। नक्शे ऐतिहासिक स्थलों, बैंकों, अन्य संस्थानों, स्थानीय बाजार एवं रुचि के अन्य स्थानों को अंकित करें। स्थानीय इतिहास की जानकारी लेने एवं उस जगह की खासियत जानने के लिए वहां के रहवासी एवं अन्य लोगों से बातचीत भी करें। उस जगह पर स्थित विविध संस्थानों के बीच के संबंधों को भी देखने समझने की कोशिश करें।
- वर्ष 1950 के एवं आजकल की कुछ पुस्तकें, फिल्में, कार्टून्स, पत्रिकायें, जर्नल्स इकट्ठा करें। किसी आम व्यक्ति से संबंधित मुद्दों को निकालने के लिए सावधानीपूर्वक उनका अध्ययन करें। उन बदलावों को रेखांकित करें जो किसी आम व्यक्ति के सरोकारों और जिन्दगी में देखे जा सकते है। क्या इनं बदलावों के पीछे के कारण, हमारे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति, इतिहास और सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में तलाशे जा सकते हैं? अपनी समझ को रिपोर्ट/कविता/कोलाज/आख्यान/नाटक या अन्य किसी माध्यम में, जिसमें आप चाहें, प्रस्तुत करें।
- फील्ड विजिट के माध्यम से किसी झुग्गी बस्ती के बारे में उसकी अर्थव्यवस्था, गुजर बसर, राजनीति एवं ऐतिहासिक स्मृतियों के अर्थ में समझ बनायें। उनकी वर्तमान चिंताओं और समस्याओं की प्रकृति को समझने के लिए इन कारकों के बीच संबंध बनायें।
- किन्हीं दो उत्पादों के बारे में उनके कच्चा माल से लेकर अंतिम रूप तक की जानकारी खंगालें। उसे अंतिम व उपयेाग लायक स्थिति तक लाने के लिए जो प्रक्रियायें होती हैं उनका अध्ययन करें। इस बात का अध्ययन करें कि किस तरह भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और इतिहास के विविध कारकों ने इन प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। इस बात को भी देखें कि उनके बीच क्या अंतर्संबंध हैं।
- किसी विशिष्ट सामाजिक विज्ञान विषय, घटना, तिथि या स्थिति के इर्द–गिर्द एक मौखिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रॉजेक्ट बनायें। साक्षात्कार और बातचीत के माध्यम से लोगों के विचारों और मतों को समझें और उन्हें जगह व सम्मान दें। इन विवरणों को अन्य स्त्रातों से तुलना करके उनकी विश्वसनीयता का विश्लेषण करें। इस प्रॉजेक्ट का उपयोग, इतिहास के बारे में उपलब्ध बहुल मतों को समझने में करें। साथ ही इस बात को भी समझें कि कैसे कुछ मत, दूसरे अन्य मतों को दरकिनार कर हावी हो जाते हैं।
- लोगों के पास होने वाले विभिन्न प्रकार के वाहनों का विश्लेषण कर किसी समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों का अध्ययन करें। जेण्डर एवं सामाजिक–आर्थिक मापदण्ड से इसके संबंधों की पड़ताल कीजिए। समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों में समय के साथ आये बदलावों को चिन्हित कीजिए। ऐतिहासिक नजरिये से दिखाई देने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करें। साथ ही परिवहन के विविध प्रकारों के आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का भी आकलन कीजिए।
- देखें कि किस तरह कार्टून्स, टिकट, मुद्रा, अखबार, पत्रिकायें, डॉक्युमेन्टरीज, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, धारावाहिक, उपन्यास एवं इसी तरह की तमाम चीजें, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयेाग होती है।
- किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन एवं सुझावात्मक समाधान।
- अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझावात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर/मस्जिद,/चर्च/गुरूद्वारा इत्यादि।

Pedagogy of English

Second year
(Upper Primary- Optional paper)
(Optional-Question paper 18)

Unit 1- Approaches and methods to teaching of English.

- Active Learning Methods
- Congnitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners.
- Teaching mutigrade classess multilevel classess.
- Socio- Psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration)
- From knowledge based approach to skill based approach.

Unit 2 - Pedagogical Implications of SLA Theories.

- Second language acquisition theories
- Interaction in second language in classroom, from theory to practice
- the pedagogy of reading.
- Discourse oriented pedagogy

Unit 3- Process and Planning.

- Characteristics of a good teaching plan
- Different processes of teaching proses, poetry, grammar.
- Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborats, Evaluate), and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recite, review, reflection)

Unit 4- Curriculum and resource material:

- NCF-05 Chapter 3 3.2.2- Curriculum , 3.3.1 The curriculum at different stages
- NCF-05 Chapter 3 3.1.1- Language education 3.1.2 Home/ first/ Language or mother tongue, 3.1.3 Second Language acquisition.
- NCF-05 Chapter 2 2.3- Curriculum studies; knowledge and curriculum
- Position Paper on Language.

Unit 5- Classroom transaction process

- Role of 'talk' in the classroom to make the class more interactive.
- Development of vocabulary through pictures, flow- charts and language game.
- Dealing with textual exercises (Vocabulary, Grammar, study skills, projectwork)

Unit-6 Assessment

- CCE-Concept and procedure: Implications of Assessment- for the learner, for the Teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record; informal feedback from the teachers; measuring progress; using portfolio for subjective assessment,
- Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE
- Attitude towords errors and mistakes in second language learning.

डी.एल.एड. – द्वितीय वर्ष
गणित शिक्षण
(कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)
Pedagogy of Mathematices
(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिए अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- बीजगणितीय चिंतन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं संबंधित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं।
- भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित संप्रेषित करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना।
- भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिंतन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें संप्रेषित के तरीकों में समर्थ हों।

इकाई 1 : गणितीय तर्क

सामान्यीकरण की प्रक्रियायें, पैटर्न पहिचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (inductive reasoning) प्रक्रिया।

- गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorems)
- गणितीय कथनों (statements) की वैधता जाँचने की प्रक्रिया : उत्पत्ति (proof), प्रति–उदाहरण, अनुमान (Conjecture)
- गणित में समस्या समाधान– एक प्रक्रिया
- गणित में रचनात्मक चिंतन

इकाई 2 : बीजगणित चिंतन

- अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न
- क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relations)
- चरों (variables) का प्रयोग–कब और क्यों।
- सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना।
- बीजगणितीय चिंतन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली।

इकाई 3 : व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन

- आंकड़ों का इकट्ठा करना, उनका वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करना।
- संग्रहित आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण।
- प्रारंभिक सांख्यिकीय तकनीक।
- रेलवे समय सारिणी सहित अन्य समय सारिणी बनाना।
- प्रतिशत।
- अनुपात और समानुपात।
- ब्याज।
- बट्टा / छूट (Discount)

इकाई 4 : स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना

- ज्यामितीय चिंतन के स्तर– वान हील (Van Hieles)
- सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ–ज्यामितीय शब्दावली।
- समरूपता और समानता (Congruency and similarity)।
- रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।

इकाई 5 : गणित को सम्प्रेषित करना

- पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ।
- गणित के शिक्षण– अधिगम की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका।
- गणित प्रयोगशाला/संसाधन कक्ष।
- छात्रों को उनके कार्यों में हुई गलतियों के बारे में फीडबैक देना।
- गणित से डर और असफलता से पार पाना।

इकाई 6 : गणित में आकलन से सम्बन्धित मुद्दे

- मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (open ended questions) और समस्याएं।
- अवधारणात्मक समझ के लिए आकलन।
- सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिए आकलन।
- गणितीय विचार को समझाने के लिए उदाहरणों एवं अन्य–उदाहरणों का प्रयोग
- तर्क के परिपेक्ष्य में पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण
- गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अववोध के विकास पर स्पष्टता

सत्रगत कार्य (Assignment)

1. कम्पास यंत्र (ज्यामिति बाक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग।
2. गोला, शंकु,बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना।
3. गोला, शंकु,बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना। आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञात करना।
4. गणित पैटर्न
5. कागज को मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनक शिक्षण में उपयोग।
6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितिय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।
   a. (a+b)2 =a2+2ab+b2
   b. (a-b)2 =a2 -2ab+b2
   c. a2-b2 =(a+b)(a-b)
7. π के सत्यापन मॉडल तैयार करना।
8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग।
10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना।
12. ज्यामिति अवधारणाओं के सत्यापान हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।
- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक ख़ाका (concept maps) बनाना चाहिए। जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुद्दों के नज़रिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढ़ना चाहिए।
- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
विषय : विज्ञान शिक्षण
Pedagogy of Science
(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

इकाई : 1 विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन (Recapetulation of Concepts of Science)

- कक्षा 1 से 8 तक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों का विज्ञान से संबंध स्थापित करना।
- जंग क्यों लगती है?
- बादल कैसे बनते है?
- मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है?
- वनस्पति और जंतु अपना भोजन कैसे करते है?
- वनस्पतियों तथा जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है।
- पवन चक्की कैसे कार्य करती है।
- बल्ब कैसे प्रकाश देता है।

इन सब प्रश्नों के लिए छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करेंगे तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक–अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें इस बात पर चिंतन करेंगे, जाँच करने के लिए निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया, इन अभ्यासों को करवाते समय षिक्षक–अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।

इकाई–2 विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचार समझना। (To now what is science and understand the scientific thoughts, idea of children)

- विज्ञान की प्रकृति– अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद
- विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में संबंध
- वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग
- वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार
- विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन विष्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।

इकाई–3 : सभी के लिए विज्ञान (Science for all)

- विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता संबंधी मुद्दे; सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका।
- जन सामान्य तथा खेती के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार।
- हरित क्रांति और टिकाऊ खेती की विधियां।
- सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव।
- अनेक प्रजातियों के लुप्तप्रायः होने के कारण।
- स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएं एवं निराकरण।
- साहित्य, सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोकसुनवाई एवं किसानों से वार्ता तथा क्षेत्र एवं विषेषज्ञों से संबंधित अन्य मुद्दे।

इकाई–4 : पाठ्यपुस्तक एवम् शिक्षण विधियों का संज्ञान (Cognition of teaching methods and text book)

- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार
- विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियां अर्न्तक्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियां, सुविधादाता के रूप में शिक्षक
- प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ
- शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक।
- वज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।

इकाई–5 : कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परताय कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन।
- योजना का मूल्यांकन
- आंकलन एवं मूल्यांकन परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), अधिगम का आंकलन, अधिगम के लिए आंकलन, रचनात्मक आंकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी प्रतिपृष्ठपोषण प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन

सत्रगत कार्य (Assignment)

- अपने आसपास होने वाली वैज्ञानिक घटनाओं का अवलोकन करते हुए उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना एवं अभिलेख बनाना।
- विज्ञान से संबधित प्रोजेक्ट कार्य
- प्रयोगों के आधारित एक पाठयोजना बनाना।
- विज्ञान के प्रादर्श निर्माण
- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व
- वर्तमान में किसी एक कृषि समस्या को पहचानना उसके वैज्ञानिक कारण को जानते हुए समाधान पर आधारित अभिलेख तैयार करना ।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- विभिन्न संदर्भों में सामान्य प्रयोग एवं अन्वेषण अयोजित करना
- वैज्ञानिक लेख, वैज्ञानिक भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, विज्ञान संग्रहालय एवं विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- अवलोकन के अवसर प्रदान करना, समूह चर्चा, क्विज, पोर्टफोलियों घटना–प्रधान अवलोकन (एनेक्डाटल), बच्चों द्वारा अप्रत्याशित प्रष्न, पेपर पेंसिल परीक्षण आदि का उपयोग करना
- इकाईवार रचनावादी निर्माणवादी उपागम आधारित पाठयोजना निर्माण करवाना।
- किताब, फिल्म, मल्टी मीडिया पैकेज जैसी षिक्षण सामग्री की सहायता से अध्यापन ।

द्वितीय वर्ष
व्यावहारिक

डी.एल.एड.–द्वितीय वर्ष
कार्य और शिक्षा
Work And Education
(व्यावहारिक–4)

इकाई 1. बागवानी

- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ–सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना।
- पौधों एवं बीजों का रोपण।
- खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग।
- वृक्षारोपण की योजना बनाना।
- कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना।
- पौधों की सुरक्षा।
- पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि।
- किचन गार्डन।
- संस्थान में गार्डन की तैयारी निर्माण

गतिविधियाँ–

सामान्य तौर पर बागवानी हेतु निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत गतिविधियाँ संचालित की जाना चाहिए। छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त क्रमानुसार गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करें।

- समतलीकरण, कंकड़–पत्थर बीनना, क्यारी का निर्माण एवं गढ्ढों को तैयार करना, गमले तैयार करना, उन्हें भरना। (क्यारियों का निर्माण फूलों, सब्जियों के आधार पर किया जा सकता है)
- बीजों की पहचान करना, बीजों के नमूने एकत्र करना एवं उपलब्ध क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक बीज की मात्रा का निर्धारण करना।
- पौधे तैयार करना– नर्सरी लगाकर, कटिंग, दाब, कलम एवं गूटी द्वारा।
- उर्वरकों, खादों एवं जैविक खादों की जानकारी प्राप्त करना, पहचान करना एवं नमूने एकत्र करना।
- कम्पोस्ट खाद या हरी पत्ती की खाद तैयार करने हेतु गड्ढे तैयार करना एवं खाद का निर्माण करना।
- प्रति हैक्टर क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक खाद एवं उर्वरकों की मात्रा की गणना करना।
- उर्वरकों को देने के तरीकों के साथ उपकरणों एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करना।
- आसपास के वातावरण एवं प्रचलित कीटों तथा रोगों के आधार पर कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की जानकारी तैयार करना।
- कीटनाशकों एवं रोगनाशकों के छिड़काव की विधियों एवं यंत्रों की जानकारी प्राप्त करना।
- बगीचे के पौधों एवं वृक्षों की कटाई, छँटाई, सहारा देना, सिंचाई हेतु थाला या लाइन बनाना।
- शाला के अनुपयोगी जल का प्रयोग बागवानी हेतु करना।

अंतरण की विधियां

- छात्राध्यापकों से निम्नानुसार नमूना फाइल बनवाई जाए–
  a. विभिन्न प्रकार के बीजों की (फूलों की, सब्जियों की)
  b. उर्वरकों एवं खादों की (उपलब्ध पोषक तत्वों के अनुसार)
  c. बागवानी या कृषि कार्यों में उपयोग लाये जाने वाले यंत्रों के चित्रों की, उपयोगिता के आधार पर।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं।

- जला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं।
- औषधीय उद्यान की तैयारी
- भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)– अपने क्षेत्र में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र, शासकीय नर्सरी अथवा प्रसिद्ध राष्ट्रीय या राज्यस्तरीय गार्डन का भ्रमण कराया जा सकता है तथा इस भ्रमण कार्य से क्या सीखा–समझा संबंधी रिपोर्ट भी तैयार की जानी चाहिए, जिसे सभी से साझा किया जा सकता है।
- प्रोजेक्ट– इसके तहत छात्राध्यापकों को एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी है, इसके लिए निम्नांकित सूची से प्रोजेक्ट कार्यों को चुना जा सकता है।
  1. अपने प्रशिक्षण संस्थान की स्थिति अनुसार एक वार्षिक पौधा रोपण योजना तैयार करना ताकि प्रांगण की सुन्दरता दिखाई दे सके।
  2. अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित पौधों, वृक्षों, पक्षियों आदि की जानकारी एकत्र करना।
  3. अपने प्रशिक्षण संस्थान में वर्षभर के लिये माहवार बागवानी क्रियाओं का केलैण्डर तैयार करना।
  4. जिले/विकासखंड/संकुल स्तर पर अपने वाले प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बागवानी संबंधी कार्यों की एक सामान्य सूची तैयार करना।

इकाई 2 चित्रकला

सामान्य उद्देश्य – छात्राध्यापक सीख सकेंगे।

1. अवलोकन क्षमता का विकास करना।
2. अपने आस पास के वातावरण से संबधित सामग्री का पता लगाना।
3. चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के कौशल का विकास करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. विभिन्न आकृतियों का अवलोकन करना और वातावरण से रंगों के उपयोग को समझना।
2. चित्रकला की वस्तुओं को पहचानना एवं संग्रहित करना।
3. विभिन्न तरह की सतहों को चित्रकला के संदर्भ में पहचान करना।
4. सरल आकृतियों को बनाना। कुछ निर्देश शिक्षक प्रशिक्षको द्वारा दिये जायेंगे तथा कुछ अधिगमकर्ता के द्वारा ढूँढ सकेंगे।

विधि

1. सीधे दृश्य सामग्री के अवलोकन द्वारा
2. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के द्वारा
3. खोज के द्वारा
4. मॉडलिंग के द्वारा
5. समूह कार्य के द्वारा
6. प्रदर्शनी के द्वारा

वैकल्पिक क्रियाएं (प्रथमिक स्तर से 2 तथा उच्च प्राथमिक स्तर से 2 चयन करेंगे)

इकाई–3

भूमिका–

कार्य और शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य कौशल विकास है। जिस वातावरण में बच्चा रहता है उसको समझते हुए स्वयं का विकास कर सके। साथ ही साथ राष्ट्रीय विकास में सहयोग कर सके। इस हेतु शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में कौशल विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। वर्तमान की आवश्यकता अनुरूप स्व विकास के लिये कौशलों की सूची दी जा रही है। इससे छात्रों में विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक कौशलों का विकास होगा। छात्र स्वयं का रोजगार कर सके, उसकी शुरुआत कर सके, अपने को आर्थिक दिशा में समर्थ बना सके।

सामान्य उद्देश्य – इसके पश्चात अधिगमकर्ता सक्षम हो सकेंगे–

- प्रायोगिक उत्पादन कौशल विकसित हो सकेगा जो व्यक्तिगत के साथ–साथ समुदाय का सामाजिक आर्थिक विकास कर सकेगा।
- स्वयं के व्यवसाय के लिये सकारात्मक अभिवृति, रुचि और ईमानदारी सीख सकेंगे।
- ऐसा वातावरण विकसित होगा जिसमें अधिकमकर्ता सीखने के लिये प्रेरित हो सकेगा।
- बच्चों में समुदाय में उच्च उत्पादकता लाने की भावना का विकास करना।

प्राथमिक स्तर के लिये (कक्षा 1 से 5) उद्देश्य

- तकनीकी कौशल में रुचि विकसित करना
- उत्पादकता के लिये कौशलों और उपकरणों का सुरक्षित ढंग से उपयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के तकनीक प्रविधि का उपयोग करना, अपने विचार को संप्रेषित करना।
- अपने कौशलों का पर्यावरण में सही उपयेाग करना।

उच्च प्राथमिक स्तर के लिये (कक्षा 6 से 8) उद्देश्य

- तकनीकी समस्याओं का समाधान करना
- व्यवसाय शुरु करने के लिये कौशल विकसित करना।
- समूह कार्य को प्रोत्साहित करना। इसके लिये प्रायोजन कार्य में 50 प्रतिशत अधिगमकर्ता की सहभागिता
- अधिगमकर्ता अपनी आय/आवक (प्दबवउम) को पैदा कर सके उसकी योजना बना सके ऐसे कौशलों का विकास करना।
- अपनी आय और व्यय के अभिलेख का रखरखाव कर सके ऐसे अभ्यास कौशलों का विकास करना।
- अपने व्यवसाय में होने वाले लाभ हानि का मूल्यांकन करना।
- व्यवसाय में समय का मूल्य और कठिन श्रम से सफलता के महत्व को जोड़ पाना।
- अधिगमकर्ता में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये कौशल विकसित करना।

विषय प्राथमिक स्तर के लिये कार्यों की सूची– (किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. कागज कला
2. खिलौना निर्माण
3. कक्ष सज्जा
4. दुकान व्यवस्थापन
5. बाजार प्रक्रिया
6. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ
7. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं।
8. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी
9. ललित कला और व्यवसाय
10. खेती एवं व्यवसाय
11. रोजगार
12. बुक बाइंडिग
13. आभूषण तैयार करना
14. ग्रामीण क्षेत्रों के व्यवसाय
15. कपड़े सिलना
16. घर में बचत एवं खर्च

उच्च प्राथमिक के लिये सूची(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

I. कागज कला

- कागज के प्रकारों को नाम सहित जानना।
- कागज के प्रकार अनुसार उससे कलात्मक कलाकृतियां बनाना।
- रद्दी कागज का उपयोग।
- कागज कला कृतियों के बाजार में महत्व को समझना।
- तैयार सामग्री के आय व्यय का ब्यौरा तेयार करना।
- काष्ठ/मिट्टी या अन्य प्रकार के खिलौना बनाने की तकनीक समझना।
- तैयार किये जा रहे खिलौने का बाजार मूल्य और उपयोगिता को समझना।
- खिलौने निर्माण में सावधानी और रखरखाव को समझना।
- खिलौने के शैक्षिक मूल्य को समझना (यह कौशल–खिलौना बाजार के साथ–साथ, खिलौने की आवश्यकता अनुरूप शोध को प्रवृत करेगा, किस आयु वर्ग के लिये किस तरह की खिलौने की आवश्यकता होगी ।

II. मिट्टी या लकड़ी या फर के खिलौने बनाना

- खलौने बनाने के साधनों की जानकारी।
- खिलौनों की उपयोगिता व महत्व।
- खिलौनों का रख–रखाव।
- खिलौने आकर्षक बनाना।
- खिलौने बनाने वाली सामग्री की जानकारी।

III. कक्ष सज्जा–

- कक्ष सजावट के उद्देश्य को समझना
- कक्ष के प्रकार (शालेय कक्ष, घर का ड्राइंग रूम, आफिस के अधिकारी कक्ष) के अनुरूप कक्ष सजावट की योजना बनाना।
- कक्ष सजावट के लिये उपयोगी सामग्री की सूची तैयार करना एवं संग्रह करना।
- कम से कम लागत में कक्ष सज्जा की येाजना बनाना।
  (यह कौशल इंटीरियर डेकोरेशन की नींव तैयार करने में मददगार हो सकता है)

IV. दुकान व्यवस्थापन

- दुकान के आशय को समझना
- दुकान के प्रकार को समझना
- दुकान में सामग्री को व्यवस्थित रखना
- बिक्री के दौरान सामान को यथोस्थान रखने को जानना
- प्रतिदिन आय व्यय का ब्यौरा तैयार करते हुये लाभ हानि को पहचानना।
- अपने आर्थिक लाभ को बढ़ाने हेतु योजना बनाना।

V. बाजार प्रक्रिया (साप्ताहिक, मेला, सब्जी, कपड़ा)

- बाजार के महत्व को जानना।
- लेन देन की प्रक्रिया को समझना
- मोल भाव की प्रक्रिया को समझना
- सामग्री की गुणवत्ता को परखना
- सेल्समेन के व्यवहार को परखना
- व्यवसायी के व्यवहार और व्यवसाय में आपसी संबध को समझनां

VI. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ

- प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता (दैनिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक) की सूची तैयार
- प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति कैसे और किसके द्वारा की जा रही है तैयार करेगा।
- ऐसी आवश्यकताओं की सूची बनाएगा जिसे उसे स्वयं पूरा करना है और उसकी पूर्ति की येाजना
- आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किये गये संघर्ष/मेहनत/कठिन कार्य का ब्यौरा तैयार करेगा। (अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने का कौशल विकसित होगा)

VII. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं –

- प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता (दैनिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक) की सूची तैयार करेगा।
- प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति कैसे और किसके द्वारा की जा रही है तैयार करेगा।
- ऐसी आवश्यकताओं की सूची बनाएगा जिसे उसे स्वयं पूरा करना है और उसकी पूर्ति की येाजना बनाएगा।
- आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किये गये संघर्ष/मेहनत/कठिन कार्य का ब्यौरा तैयार करेगा। (अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने का कौशल विकसित होगा)

VIII. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी–

- ईमानदारी के आशय को समझना
- व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी के महत्व को समझना।
- व्यावसायिक गतिविधियों में विज्ञापन की विश्वसनीयता को समझना।
- विज्ञापन और व्यवसाय का महत्व

IX. ललित कला और व्यवसाय

- ललित कला को समझना
- ललित कला पर आधारित व्यवसाय।
- ललित कला पर आधारित सामग्री की बाजार तक पहुँच।

X. खेती एक व्यवसाय

- खेती को लाभ का धंधा बनाने के प्रयास
- खेती की मौसम पर निर्भरता, समस्याओं को समझना।
- कृषि यांत्रिक का महत्व

XI. रोजगार

- रोजगार का महत्व
- रोजगार के अवसर
- विभिन्न रोजगार हेतु योग्यता, रोजगार प्राप्ति हेतु तैयारी प्रयास
- भविष्य में किस तरह के रोजगार बढ़ने की संभावना

XII. बुक बाइंडिंग

- प्रचलित आभूषण एवं परंपरागत आभूषणों की जानकारी।
- कम लागत में आभूषण निर्माण करना।
- आभूषण का बाजार मूल्य जानना।
- बाजार में जगह बनाने हेतु प्रयास करना।

XIII. आभूषण तैयार करना

- प्रचलित आभूषण एवं परंपरागत आभूषणों की जानकारी।
- कम लागत में आभूषण निर्माण करना।
- आभूषण का बाजार मूल्य जानना।
- बाजार में जगह बनाने हेतु प्रयास करना।

XIV. ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय

- घरेलू एवं कुटीर उद्योगों की जानकारी
- विभिन्न घरेलू व्यवसाय में लगने वाला कच्चे माल की जानकारी (कोई एक)
- घरेलू स्तर पर लगाये जाने वाले व्यवसाय की योजना बनाना।
- किये जाने वाले व्यवसाय के बाजार मूल्य का पता लगाना।

XV. कपड़े सिलना–

- एक व्यवसाय के रूप में देखना।
- व्यवसाय के रूप में स्थापित करने की योजना बनाना।
- प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रयास करना।

XVI. घर में बचत एवं खर्च

- बचत से आशय
- घर में किस तरह बचत हो सकती है।
- घर के प्रमुख और गौण खर्चे क्या हैं।
- माह में खर्चे का हिसाब रखना।
- आगामी माह हेतु बचत योजना बनाना।

XVII. **व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब–किताब एवं बजट बनाना–**

- व्यक्तिगत तथा घरेलू बजट बनाने की उपयेागिता।
- उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची तैयार करना।
- प्रत्येक सामग्री के मूल्य की जानकारी प्राप्त करना।
- आय व आवश्यकता के अनुसार परिवार का बजट बनाना।
- आय–व्यय का लेखा–जोखा रखना व महत्व समझना।
- वर्तमान आय–व्यय के लेखों की पिछले से तुलना करना।

XVIII. काष्ठ का कार्य :–

- लकड़ी की किस्म एवं उसकी उपयोगिता जानना।
- लकड़ी को सुरक्षित रखने की विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की लकड़ी के गुण जानना।
- कार्य करते समय सावधानियाँ एवं उपचार।
- औजारों का वर्गीकरण करना।
- औजारों का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना।

- वार्निश बनाने की विधि तथा पॉलिश करना, स्प्रे पॉलिश बनाना तथा वार्निश पॉलिश व स्प्रे पॉलिश के गुण, अवगुण एवं अंतरों को समझना।
- खिलौने में उपयोग के लिये साधनों की जानकारी
- खलौनों का रख–रखाव
- खिलौनों को आकर्षक बनाने हेतु प्रयास
- फर्नीचर को पालिश करना
- फर्नीचर को दीमक–सीलन से बचाना

XIX. उद्योग में शुरुआत (उद्यमी)

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में लेना
- कैसे उद्योग राष्ट्रीय विकास में सहायक हैं।
- उद्योग प्रारंभ करने में आने वाली कठिनाइयाँ
- उद्योग का बाजारीकरण

XX. उद्यमी एवं राष्ट्रीय विकास

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में लेना
- कैसे उद्योग राष्ट्रीय विकास में सहायक हैं। कैसे उद्योग राष्ट्रीय विकास में सहायक हैं।

XXI. **आर्थिक विकास में भूमिका**– आर्थिक विकास से आशय

- कार्य करते हुये आर्थिक स्थिति को मजबूत करना।
- आर्थिक विकास में स्वयं की भूमिका

XXII. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि–

- किसी भी कार्य में उत्कृष्ठता लाने से आशय समझना
- कार्य की गुणवत्ता को और अधिक श्रेष्ठ बनाना।
  किये कार्यों में उपलब्धि शामिल करना।

XXIII. प्रदर्शनी और प्रदर्शन

- प्रदर्शनी और प्रदर्शन से आशय
- प्रदर्शनी का महत्व
- प्रदर्शित में प्रदर्शन प्रक्रिया का महत्व

XXIV. अभिलेखों का रख रखाव–

- अभिलेख से आशय
- अभिलेख के प्रकार
- अभिलेखों का महत्व
  किसी 2 प्रकार की अभिलेखों का संधारण

XXV. बैंकिग सम्बधित जानकारी

- बैंक जमा बचत, लेन देन पर्ची की जानकारी
- बाजारों में वस्तुओं पर मिलने वाली छूट (प्रतिशत में) की समझ, बिल बनाना
- जमा, निकासी पर्ची की समझ
- बैंक की योजनाएँ
- योजना से मिलने वाले लाभ– हानि की समझ
- अखबारों में छपने वाले विज्ञापन की कटिंग से बाजार के सामानों पर मिलने वाली छूट की स्क्रैप बुक बनवाना

डी.एल.एल द्वितीय वर्ष
रचनात्मक नाटक, ललित कला और िशक्षा
Creative Drama,Fine Art and Educaion
(व्यावहारिक–5)

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- कला माध्यमों के साथ स्वयं कार्य करने के अवसर देना।
- विविध क्षेत्रों के कलाकारों को सुनने/उनके कार्य को देखने और उनसे बातचीत करने के अवसर उपलब्ध कराना।
- अपने क्षेत्र के सांस्कृतिक मेलों एवं प्रदर्शनियों का अवलोकन करना और इस अनुभव पर चर्चा करना। स्थानीय कलाकारों/कामगारों (महिला एवं पुरुष) को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभाओं से सीखने के अवसर निर्मित करना। ये स्थानीय कला जैसे मांडना, रंगोली, मेंहदी, मूर्ति बनाना आदि हो सकते हैं।
- संस्थान में हस्तकला, चित्रकला, मूर्तिकला, कठपुतली, मुखौटे तथा शिक्षण सामग्री के प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उसमें सहभागिता करना।
- विभिन्न कलात्मक और सामाजिक सरोकारों से सम्बंधित फ़िल्में दिखाकर उन पर चर्चा करना।
- लोकसंगीत एवं सुगम संगीत के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- कल व सामूहिक लोक नृत्यों के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- संगीत के विभिन्न रूपों को समझते हुए मानवीय संस्कृति में संगीत की भूमिका को आगे ले जाना।
- संगीत का प्रयोग करते हुए प्रस्तुतियाँ देना।
- लोक संगीत के कलाकारों और सुगम संगीत के कलाकारों की प्रस्तुतियां करवाना एवं इस अनुभव पर चर्चा करना।
- आवाज़ खोलने का प्रशिक्षण देना, स्वर लय व ताल का अभ्यास करवाना।
- क्षेत्र विशेष के पारंपरिक लोक संगीत जैसे– लोरियां, फसल के गीत, त्योहारों के गीत, विवाह के गीत आदि को एकत्रित करना व उनका आनंद लेना।
- बच्चों के साथ मिलकर सांगीतिक टुकड़ों की रचना करना और संगीत के सत्र का संचालन करना।
- मध्यप्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य के बारे में बताना।
- सहजता से उपलब्ध विभिन्न वाद्य यंत्रों से परिचय कराना।

सत्रगत कार्य (Assignment)

- अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकनृत्य और लोकगीतों की जानकारी एकत्र करना।
- अपने क्षेत्र के कुछ लोकगीतों का संग्रह करना।
- अपनी कक्षा में समूह में किसी लोकनाट्य का मंचन करना।
- अपने अंचल में प्रचलित किसी लोकनाट्य का अवलोकन करें, उसके बारे में समूह में चर्चा करना।
- एक विज्ञापन तैयार कर प्रस्तुत करना।
- किसी लोक कलाकार से बातचीत करते हुए उनकी कला यात्रा की जानकारी इकट्ठी करना, इस कला की आज की स्थिति और कलाकारों की तकलीफ़ों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करना।
- कागजों/पेपरमेंसी/कपड़े आदि के प्रयोग से कठपुतली मुखौटे आदि बनाना।
- कट आउट्स के माध्यम से कहानी का प्रदर्शन करना।
- इंटर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय कठपुतली का प्रयोग कर कहानी सुनाना।
- इंटर्नशिप के दौरान कट आउट्स के माध्यम से शिक्षण करना।

डी.एल.एल द्वितीय वर्ष

बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा

Children's Physical, Emotional Health and Health Education

व्यावहारिक–6

इकाई 1. बच्चों का शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा

- स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा, व्यवहार परिवर्तन प्रादर्श बनाम स्वास्थ्य प्रसार उपागम का तार्किक अध्ययन।
- स्वास्थ्य शिक्षा उपागम की केस स्टडी– उदा.– एकलव्य, म.प्र. एफ.आर.सी.एच. महाराष्ट्र, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा का कार्यक्रम, स्वामी विवेकानंद युवा आंदोलन, कर्नाटक आदि।
- शालेय स्वास्थ्य पाठ्यक्रय का क्षेत्र – सी.बी.एस.ई., अन्य विषय संबंधी रूपरेखा – (उदा. एकलव्य, एस.एच.ई.पी., एफ.आर.पी.एच, यूनीसेफ, नाली–काली रणनीति, शालेय स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा)

इकाई 2. स्वास्थ्य शिक्षा हेतु ज्ञान एवं कौशल विकास–

- भोजन एवं पोषण
- संक्रामक रोग
- स्वयं के शरीर का ज्ञान– स्वास्थ्य एवं उपचार संबधी वैकल्पिक तंत्रं
- प्राथमिक उपचार (कार्यशाला पद्धति)
- बाल शोषण :– (इस संदर्भ में शोषण के संदर्भित अर्थ, विभिन्न प्रकार एवं प्रभाव, कानूनी प्रावधान की जानकारी । इस बिन्दु के अंतर्गत शारीरिक दण्ड एवं बाल यौन उत्पीडन की जानकारी भी है। इसका उद्देश्य एक शिक्षक के तौर पर इस क्षेत्र विशेष में जागरूकता, चिंतन, जानकारी एंव मूलभूत कौशल का विकास करना है।

इकाई 3 – भावनात्मक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएँ, विभिन्नताएँ एवं समायोजन

- भावनात्मक स्वास्थ्य की समझः आत्मावलोकन
- भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य का ज्ञानात्मक संबंध
- शालेय कार्यप्रणाली एवं इसका बाल भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- कक्षा में विभिन्नता– भिन्न–भिन्न अधिगमकर्ता, भिन्न–भिन्न आवश्यकताएँ एवं समावेशन का सिद्धान्त ।
- अधिगम अशक्तता एवं कक्षा में सहभागिता।

इकाई 4– शारीरिक शिक्षा– स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अभिन्न अंग।

- शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता – स्वास्थ्य एवं शिक्षा से संबंध ।
- शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद
- पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन
- खेल भावना, सहयोग एवं सामंजस्य क्षमता का विकास।

इकाई 4 पर आधारित प्रायोगिक कार्य–

- संस्थान में मूलभूत व्यायाम, पी.टी. एवं समूह खेल (जैसे– खोखो, कबड्डी, फुटबॉल) का आयोजन एवं सहभागिता।
- इंटर्नशिप के दौरान संस्था में उपलब्ध शारीरिक शिक्षा संबंधी गतिविधि, संसाधन, स्थान एवं किस गतिविधि को को बालक/बालिका द्वारा खेला जा रहा है, का निरीक्षण कर रिकार्ड रखें।
- प्रागंण की संरचना, खेलों के प्रकार, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की पहचान और छूटे हुए छात्रों की रिपोर्ट को निम्न बिन्दुओं में समाहित करें।
  1. शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति।
  2. खेल के स्थान एवं संसाधनों की सीमितता की जानकारी। खेलों में नवाचार
  3. क्षेत्रीय खेलों (ग्रामीण खेलों) का चिन्हांकन एवं जानकारी का संधारण।

सत्रगत कार्य ; (Assignment) –

- शाला इंटर्नशिप के लिये जाने से पहले प्रशिक्षु (इंटर्न) को स्वास्थ्य संबंधी विषयवस्तु को अन्य विषयों के साथ समायोजित करते हुए गतिविधियों, कार्य योजना एवं सामग्री का निर्माण करना अनिवार्य हैं
- छात्र प्रशिक्षु को एक चयनित स्वास्थ्य शिक्षा विषयवस्तु पर बनाई गई पाठ्य योजना को एस.डी.पी. ैक्च्द्ध के दौरान प्रस्तुत करना होगा।
- स्वास्थ्य योजना संबंधी विचार एवं निर्मित सामग्री और किये गये शोध कार्य में दी गई जानकारी सही हो एवं आतंरिक मूल्यांकन हेतु रिफ्लेक्टिव रिर्पोट प्रस्तुत की जाए।
  1. योग : मूलभूत सिद्धान्तों एवं आसनों का अधिगम
  2. एथलेटिक्स (व्यायाम)
  3. खेलकूद का आयोजन एवं खेल के मैदानों का चिह्नांकन आदि।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)
आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग, पीटी, जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

1. चार्ट कैलेण्डर, मॉडल, आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
2. हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
3. प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है।
4. स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्राम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा प्रयत्नशील बनाने का प्रयास करना।
5. पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
6. योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
शिक्षण अभ्यास एवं शाला इंटर्नशिप
(Teaching Practice and School Internship)
व्यावहारिक

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- शाला के अनुभवों को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त शालेय गतिविधियों और अभिभावकों के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान करना।
- छात्रों की विविध आवश्यकताओं एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले विभिन्न संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उचित योजना का निर्माण कर एक नियमित शिक्षक की भूमिका को आत्मसात (ग्रहण) करना।
- वर्तमान प्रणाली की सीमाओं के अन्दर रहते हुए नवाचार करने की क्षमता को विकसित करना।
- कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियों को सिखाने के लिए गतिविधियों का उचित चयन एवं क्रियान्वयन करना।
- अपने विद्यालयीन अनुभवों पर समालोचनात्मक चिंतन करना और इसका रिकार्ड रखना।
- केवल उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय बच्चों के सीखने के विभिन्न पहलुओं का आकलन करना।
- कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के शाला विषयों के शिक्षण में सहभागिता करना।

इन उद्देश्यों के अनुसार कार्यक्रम में निम्नलिखित अधिभार के घटकों की आवश्यकता होती है।

- योजना – 30%
- शिक्षण – 30%
- चिन्तनशील जर्नल एवं रिकार्ड रखरखाव – 40%

शाला इन्टर्नशिप कार्यक्रम में छात्राध्यापक को नवाचारी शिक्षण पद्धति के केन्द्र एवं नवाचारी अधिगम के केन्द्र को समाहित करते हुए भ्रमण करना चाहिये। जहाँ तक संभव हो कक्षा आधारित शोध परियोजनाओं को लेना चाहिये। इंटर्नशिप शालाओं में संसाधनों को विकसित कर संधारित करना चाहिये।

शाला इंटर्नशिप में शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रति विषय 4 इकाई योजना से अधिक शामिल नहीं करें। इकाई की योजना बनाते समय शाला की पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त विविध स्त्रोतों से प्राप्त सामग्री की समालोचनात्मक संलग्नता को शामिल करते हुए संगठित कर प्रस्तुतिकरण किया जाये। प्रश्नों को विशेष रूप से इस प्रकार तैयार करें कि–

a) विद्यार्थी के ज्ञान और समझ का आकलन कर सकें।
b) अर्थपूर्ण कक्षा निर्माण और आगे की ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया कर सकें।
c) छात्र अधिगम का आकलन करते हुए शिक्षण शास्त्रिय अभ्यास में सुधार कर आगे अधिगम को बढ़ा सकें।

छात्राध्यापक (इंटर्न) को सामान्य तथा विषयवार पर्यवेक्षण के लिए संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षी समर्थन (सुपरवाइजरी सपोर्ट) की आवश्यकता होगी। ये विषय विशेषज्ञ इंटर्न का आकलन भी करेंगे। उचित गतिविधियों का चयन करते हुए इंटर्न को इकाई योजना का निर्माण करना चाहिये। इन योजनाओं का रिकार्ड संधारित करना होगा। प्रत्येक इंटर्न से आशा की जाती है कि वे नियमित रिफ्लेक्टीव जर्नल संधारित करे, जिसमें वे अपने अभ्यास के अनुभवों पर प्रतिक्रिया देने तथा शिक्षणशास्त्र एवं अध्ययन किये गये सैद्धांतिक विषयों के बीच संबंध (linkage) बना सके।

द्वितीय वर्ष

इंटर्नशिप उन कक्षाओं के अवलोकन से प्रांरभ होगी जहाँ इंटर्न को पढ़ाने जाना है। अवलोकन छात्रों की रूचि, आवश्यकताओं एवं स्तरों के साथ–साथ कक्षा के अभ्यास और उपयोग की गयी सामग्रियों का किया जाना है। सुपरवाईज़र के साथ चर्चा तथा जर्नल का अभिलेखीकरण अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग है।

इन अवलोकनों के आधार पर तथा रचनावाद पर आधारित कुछ अवधारणाओं का उपयोग करते हुये योजना बनायें। सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम उद्देश्यों का स्पष्ट निर्माण करें साथ ही किस प्रकार अधिगम को संगठित किया जायेगा इसका विस्तृत वर्णन करें जैसे– चर्चा का तरीका, छोटे समूह या व्यक्तिगत कार्य। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्व–अधिगम के माध्यम से आकलन करते हुये सम्मिलित रहते है।

सुपरवाईज़र इन क्षेत्रों पर अपना फिडबैक दे –

- इंटर्न के ज्ञान का आधार।
- जीवन के अनुभव पर आधारित विद्यार्थियों के पूर्ण ज्ञान से संबंधित सटीक प्रश्नों को पूछना।
- विभिन्न आवश्यकताओं के आधार पर उचित अनुदेशात्मक रणनीतियों पर प्रतिक्रिया करना।
- सभी विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव की इस प्रकार सुविधा देना जिससे उनमें समालोचनात्मक चितंन, चयन और अंतः क्रिया को बढ़ावा मिले और विषयों की स्वयत्ता बनी रहे।
- अधिगमकर्ता की पाठ्यपुस्तकों, शिक्षकों, वरिष्ठों पर निर्भरता को कम करते हुये वैकल्पिक स्त्रोतों का संदर्भ देना चाहिये। जैसे– सहपाठी, किताबें, इन्टरनेट इत्यादि।
- समय का सदुपयोग करें।
- डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम और कक्षा अवलोकन के बीच संबंध स्थापित करें।

सुपरवाईज़र की भूमिका–

एक सुपरवाईज़र 4–6 विद्यार्थियों के मध्य काम करेगा। उपरोक्त निर्देशो के अतिरिक्त पार्टनर शाला के साथ लगातार बातचीत करेगा। इंटर्न को समस्याओं की पहचान करा कर–सृजनात्मक समाधान के लिए प्रेरित करेगा ताकि वह शाला की सामर्थ और सीमाओं को पहचान कर नये–नये विचारों के साथ समझौता करना सीखें। इंटर्न द्वारा एक अस्थायी रिवाज़ के लिए इंटर्नशिप अवधि को कम करना तथा शाला को प्रयोगशाला की तरह उपयोग करने की भावना छोड़नी होगी तभी इंटर्न को प्रोत्साहन मिलेगा।

सुपरवाइज़र कक्षा में बगैर बाधा के जल्दी पहुँचकर कक्षा के विस्तृत संदर्भ को समझाने के लिए यह देखे की इंटर्न किस प्रकार विद्यार्थियों को कार्य में संलग्न कर रहा है। फीडबैक तुरंत जितनी जल्दी हो सके दिया जाना चाहिए और दी गयी टिप्पणी पर कार्य करने के लिये इंटर्न को प्रोत्साहित करना चाहिये। शाला सुपरवाईज़र को प्राथमिक में 05 बार तथा माध्यमिक में 02 बार जाना चाहिये। विषय विशेषज्ञ को 02 बार प्राथमिक तथा 02 बार माधमिक में जाना चाहिये।

जर्नल्स्–

जर्नल्स के अंतर्गत कुछ अंश विवरण का एवं ज्यादा अंश चिन्तन एवं विश्लेषण का होना चाहिये। विवरण प्रत्येक विद्यार्थि पर, शिक्षण शास्त्र पर, प्रबंधन के मुद्दों पर, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित होना चाहिये।

अधिकतम अंक = 15

इंटर्न ने कक्षा में क्या और क्यों किया इस प्रतिक्रिया पर विश्लेषण आधारित होगा। उदाहरणार्थ–क्या इंटर्न बच्चों को विकास के सिद्धांत के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव के साथ भी संलग्न कर रहा है? इस समय अवधि के दौरान इंटर्न को प्रगति पर पूरा फोकस होना चाहिये। उदाहरणार्थ–सुपरवाईज़र की टिप्पणीयों पर प्रतिक्रिया करनी चाहिये, और गुणात्मक सुधार नियमित जर्नल में प्रस्तुत करना चाहिये इत्यादि।

अधिकतम अंक = 25

नोटः– इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक (इंटर्न) मंगलवार से लेकर शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा और सोमवार को अपने सुपरवाईज़र के साथ, सप्ताहांत में बनाई गयी पाठ्ययोजनाओं पर फीड बैक और मार्गदर्शन लेगा और इस आधार पर पुनः मंगलवार से शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा। यह चक्र संपूर्ण इंटर्नशिप अवधि के दौरान जारी रहेगा।